RAJBIL26868/2016/1284525
वर्ष 4 अंक 7 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका अगस्त 2021

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

पेज संख्या : 36 राजसमंद
प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

राजसमंद जिला कलक्टर
श्रीमान् अरविन्द कुमार पोसवाल
के राज्य स्तर पर
बेस्ट जिला कलक्टर के रूप में
चयन होने पर जयवर्द्धन की ओर से
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

आओ मेहनत को अपना ईमान बनाएं, अपने हाथों को अपना भाग्य बनाएं,
सपनों से भी प्यारा हिंदुस्तान बनाएं, नया खून है, नई उमंगे अब है नई कहानी,

हम हिन्दुस्तानी

सभी देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
जयवर्द्धन NEWS
YouTube Channel Jaivardhan News
मेवाड़ी जयवर्द्धन

vedanta
transforming elements

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

देश की ज़रूरतों के लिए
देश का अपना ज़िंक !
हिन्दुस्तान ज़िंक

आप सभी को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ।

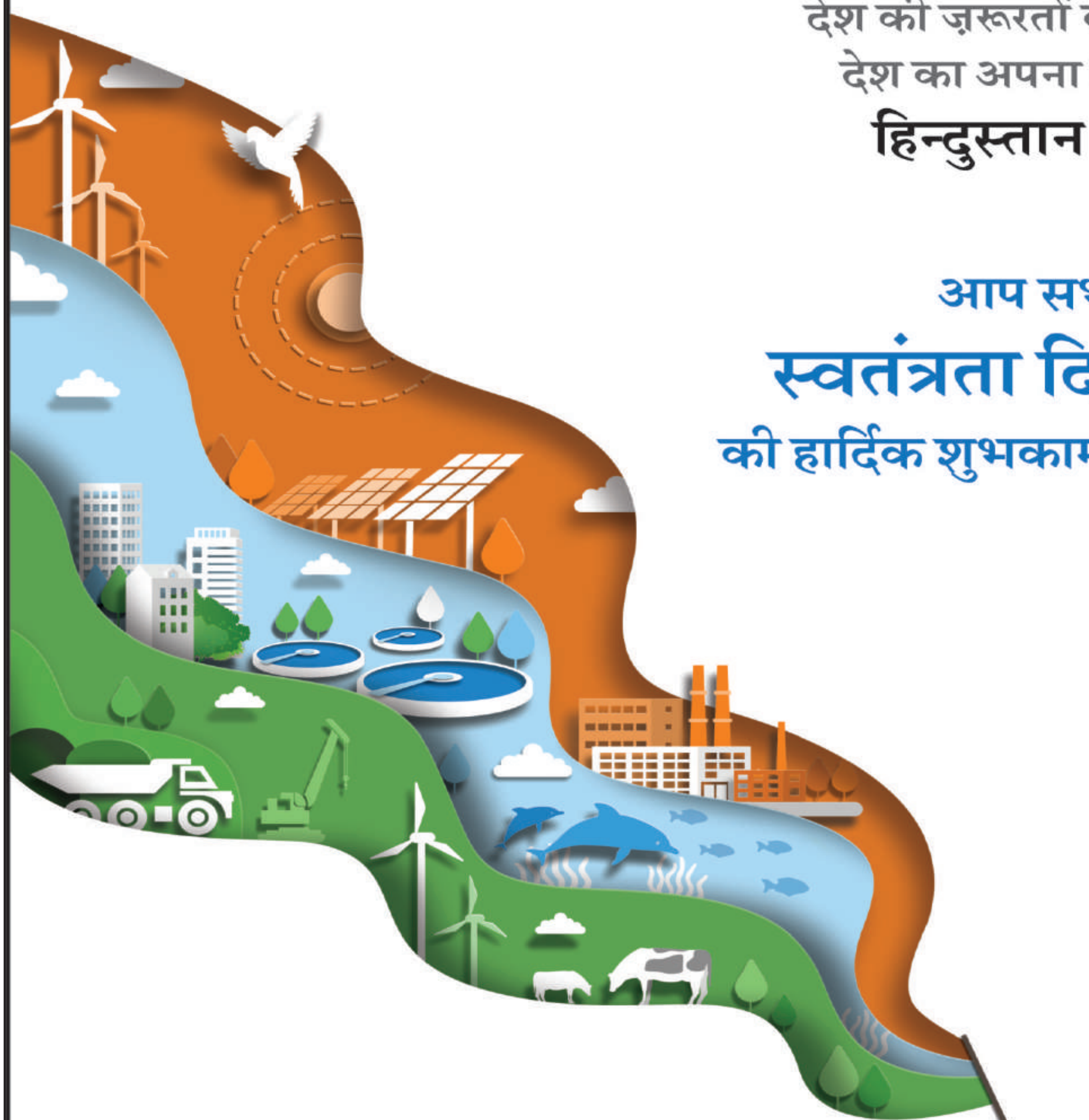

Worlds leading integrated Zinc-Lead Producer
Worlds 6 th largest integrated Silver Producer

Hindustan Zinc Limited
Yashad Bhawan | Near Swaroop Sagar | Udaipur - 313004 | Rajasthan | India
P : +91 294-6604000-02 | www.hzlindia.com | CIN - L27204RJ1906PLC001208
www.facebook.com/HindustanZinc | www.twitter.com/CEO_HZL | www.twitter.com/Hindustan_Zinc
www.linkedin.com/companyhindustanzinc | www.instagram.com/hindustan_zinc

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा,
लक्ष्मणसिंह राठौड़
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान

विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan News

सम्पादकीय

सपनों का भारत बनने में अभी समय

स्वतंत्रता शब्द ही अपने मन में आत्मिक सुख की अनुभूति कराता है। स्वतंत्रता की महत्ता तब और भी बढ़ जाती है, जब उसे बड़ी कठिनाई से प्राप्त किया गया हो। भारत कई सालो तक विदेशी आक्रान्ताओं से गुलामी की जंजीरों में झकड़ा रहा। कितने ही सालों के संघर्षों और बलिदानों से हमें यह स्वतंत्रता 15 अगस्त 1947 को मिली और आजादी के इसी पावन दिन को हम स्वतंत्रता दिवस के रूप हर वर्ष मनाते हैं।

देश की स्वतंत्रता के साथ देखे गए कई सुनहरे स्वप्नों को साकार करने के लिए उस समय की स्थितियां बिल्कुल अनुकूल नहीं थी। गरीबी, निरक्षरता, बेरोजगारी, जातिवाद, बीमारियां, गिरती अर्थव्यवस्था जैसी चुनौतिया सामने थी, तो पड़ौसी देशो की बार बार घुसपैठ, आक्रमण से भी देश लड़ रहा था। इन सभी से देश के सभी कर्णधारों ने एकजुट होकर इन सबसे लड़ते हुए देश को एक नई दिशा प्रदान की।

स्वतंत्रता के 75 वर्ष के बाद आज हमनें शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, रक्षा आदि विभिन्न क्षेत्रों में काफी प्रगति की है और विश्व के कई विकसित देशों के साथ हम खड़े हो चुके है। देश आज प्रगति के पथ पर गतिमान है, लेकिन अभी कई और लक्ष्य देश के सम्मुख है और कई नई चुनौतिया भी सामने हैं। भारत की जिस सुन्दर तस्वीर को मन में लेकर देशभक्तों ने हमें आजादी दिलाई, वो भारत बनाने में अभी हमें और एकजुटता, सद्भाव, आपसी प्रेम व सहयोग की जरुरत है। देश में हो रहे आंतरिक कलह, गुटबाजी, धर्म के नाम पर दंगे, झगड़े- फसाद कालाबाजारी, लुटपाट हमारे उस सुनहरे भारत के निर्माण में बाधक है।

यदि हम भारत को फिर से सोने की चिड़िया, विश्वगुरु बनाना चाहते हैं, तो हम सबको फिर एकसाथ मिलकर देशहित को सर्वोच्च मानते हुए प्रेम व सद्भाव से कार्य करते हुए चलना होगा, तभी हम सुनहरे भारत का स्वप्न साकार कर सकेंगे।

स्वतंत्रता दिवस के पावन दिवस की सभी देशवासियों को बहुत बधाई व शुभकामनाएं

कमलेश जोशी 'कमल'
शिक्षक व कवि
कांकरोली राजसमन्द

इस अंक में खास

1. **कवर स्टोरी 1 :** शहीदों के सपनें आज भी अधूरे — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** अपने कर्तव्यों की याद दिलाता... अमृत महोत्सव — पेज - 6
3. **कवर स्टोरी :** 75 साल की आजाद सड़क — पेज- 7
4. **राजसमंद आज कल और कल** — पेज- 10
5. **व्यंग्य :** गोल्डमेडलिस्ट मंतरिया बाबा — पेज - 12
6. **तीखी मिर्ची :** तोकालॉजी — पेज - 16
7. **मेरा गांव मेरे लोग :** स्व. माणकलालजी वशिष्ठ — पेज - 18
8. **व्यंग्य :** यही तो है घोर आश्चर्य — पेज - 20
9. **समसामयिकी प्रश्नोत्तरी** — पेज - 22
10. **कविताएं :** राखी भेजवा देना, दुमदार दोहे, कद भणवां ने जाऊं — पेज - 22
11. **कहानी :** सफर से हमसफर — पेज - 24
12. **परम्परा :** सवा माह औरत बनकर औरत से दूर — पेज- 25
13. **राजस्थानी केणावतां** — पेज - 26
14. **व्यंग्य :** पुलिस थानों में मानवाधिकारों को सबसे अधिक खतरा ! — पेज - 28
15. **चिंतन :** स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों का भारत — पेज - 30
16. **मेवाड़ी चौपाल :** इंदर राजा गाजो — पेज - 34

शहीदों के सपनें आज भी अधूरे

जनसंख्या वृद्धि, आरक्षण, आतंकवाद, महंगाई व भ्रष्टाचार से कब मिलेगी आजादी

आज हमारा देश 75वां स्वतंत्र दिवस मना रहा है अर्थात हमारी स्वतंत्रता की यह हीरक जयंती है। स्वतंत्रता के संग्राम में कई जाने और अनजाने महापुरुषों ने अपना जीवन हवन कर दिया। कठिन संग्राम के दौरान उन्होंने अपने सपनों में स्वर्णिम भारत की तस्वीर देखी होगी। एक संपन्न व समृद्ध देश की कल्पना उन्होंने की होगी, जिसमें कोई गरीब ना हो और स्वतंत्र भारत में सभी अपने स्वाभिमान के साथ सिर उठाकर जी सकें। आज 74 वर्ष बीत जाने के बाद हमें यह सोचना चाहिए कि जिन उम्मीदों के साथ उन महापुरुषों ने जीवन दांव पर लगाया, क्या हम उनकी उम्मीदों पर खरा उतर पाए हैं।

इतने वर्षों बाद भी कई लोग रोटी, कपड़ा और मकान की मूलभुत सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं। भारत में देशभक्ति के फिल्मी गीत तो हम खूब दोहराते हैं, मगर देशभक्ति का मूल भाव हमारे भीतर कितना है, यह मंथन करना चाहिए। किसी भी मुद्दे पर विरोध करते समय हम सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने में देर नहीं करते हैं। हम अपने राष्ट्र के प्रति ईमानदार कितने हैं, यह इसी से अंदाजा लगता है कि हमारे जनप्रतिनिधि संसद में जाकर बात बात पर वहां कुर्सियां फेंकते हैं। लोकतंत्र की रक्षा की शपथ लेने वाले राजनेता आज सिर्फ काली कमाई करने में लगे हुए हैं। अपनी पार्टी को मजबूत बनाने के लिए अरबों रुपए का धन राशि इकट्ठा करते हैं, मगर हमारे देश को आर्थिक मजबूत बनाने में रुचि नहीं दिखाते हैं। देश में गरीबों के उत्थान की योजनाएं खूब बनती है। मुफ्त अनाज, मकान और रोजगार भी बांटे जाते हैं, मगर परिणाम में सफलता नहीं मिलती हैं। हमारे यहां प्रत्येक सरकारी योजनाओं का उद्देश्य अंतिम छोर पर बैठे इंसान का जीवन स्तर उठाना है। मगर योजना के मूर्त रूप में आते- आते सिर्फ नेता और अधिकारियों का जीवन संपन्न कर जाती है। तब स्वतंत्रता संग्राम में सर्वस्व समर्पित करने वाले लोग जुड़े थे और स्वतंत्रता के बाद भी उन्हीं लोगों को राजनीति में नेतृत्व का अवसर दिया गया था, मगर धीरे- धीरे राजनीति में बाहुबली व अपराधी किस्म के लोग बढ़ते जा रहे हैं। राजनीति में बने रहने के प्रति इतने आकर्षित क्यों है। ये लोगों को क्यों राजनीति में जन सेवा करने के लिए यह इतने आमादा रहते हैं। सत्ता में बने रहने के लिए यह हर स्तर पर गिरने को तैयार रहते हैं, चाहे इसके लिए पार्टी तक छोड़नी पड़े। क्या इसका साफ मतलब यही नहीं है कि राजनीति जन सेवा के लिए नहीं, बल्कि स्वयं की सेवा के लिए ही की जाती है। देश में बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी को कम करने की दिशा में कुछ भी कारगर उपाय नहीं किए जाते हैं। हमें अब यह विचार करना होगा कि देश में आजाद कौन है ?

नरेन्द्र मोदी के शासन काल में कई क्षेत्र में काफी कुछ बदलाव हुए हैं।जम्मू कश्मीर में धारा 370 हटाना, तीन तलाक कानून व राम मन्दिर के बहुप्रतिक्षित फैसले आने से साम्प्रदायिक विवाद पर कमी आई है। मगर आज भारत में जनसंख्या, आरक्षण, महंगाई, भ्रष्टाचार व बेरोजगारी की समस्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इस पर कारगर उपाय अत्यावश्यक है। तभी हम स्वतंत्रता दिवस पर सेनानियों को सच्ची श्रद्धांजलि दे पाएंगे।

आजादी के 74 सालों में कितना बदला हमारा भारत

एक वक्त था जब भारत देश अंग्रेजों का गुलाम था। कई सालों तक अंग्रेजों ने भारत पर राज किया और यहां के लोगों को अपना गुलाम बनाकर रखा। वहीं, देश को आजाद कराने के लिए कई वीर सपूत आगे आए और बिना अपनी जान की परवाह किए हुए अंग्रेजों से दो- दो हाथ किए। इसमें कई वीर सपूत शहीद हुए, कई नेताओं को जेल जाना पड़ा और तब जाकर कहीं हमें ये आजादी मिली। 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ और अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा। तब से हर साल 15 अगस्त के दिन देश आजादी के इस पावन पर्व को सेलिब्रेट करता है। इस साल देश अपना 75वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। ऐसे में ये समझना जरूरी है कि आखिर इतने सालों में देश कितना बदला है ? इन सात दशकों में भारत में काफी कुछ बदला है, जिसकी कुछ बातें हम आपको बताने जा रहे हैं, तो चलिए जानते हैं-

आजादी के समय कई बड़े नेता घोड़े या बैलगाड़ी के जरिए एक जगह से दूसरी जगह जाते थे, लेकिन अब देश के राष्ट्रपति से लेकर हर कोई अपनी कार में यात्रा करताहै। ये देश की तरक्की ही तो है, जो बैलगाड़ी से शुरू हुआ सफर आज गाड़ियों पर आ गया है।

बात प्रति व्यक्ति आय की करें, तो ये साल 1947 में 274 रुपये थी, लेकिन साल 2020 तक ये 1.35 लाख रुपए तक हो गई थी। जो समय के साथ लगातार बढ़ती रहती है।

आजादी के समय प्रधानमंत्री की सुरक्षा में इतने बॉडीगार्ड या जवान नहीं होते थे, जितने की मौजूदा समय में। आज के दौर में प्रधानमंत्री की सुरक्षा का जिम्मा एसपीजी का होता है। आज की सुरक्षा कुछ ऐसी है कि परिंदा भी प्रधानमंत्री या किसी वीआईपी नेता की सुरक्षा में पर नहीं मार सकता है।

आजादी के समय में लोग बीमारी से कम बल्कि भुखमरी से ज्यादा मरते थे। वहीं, आज के दौर में अब भूखमरी से तो कम लेकिन बीमारियों से ज्यादा मर रहे हैं। बीते कुछ सालों में कई बीमारियां हमारे बीच आई हैं, जिसमें से कोरोना वायरस है, जो बेहद ही खतरनाक है।

कवर स्टोरी

अपने कर्तव्यों की याद दिलाता आजादी का अमृत महोत्सव

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा था कि 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं' अर्थात पराधीनता में सपने में भी सुख की कल्पना नहीं की जा सकती है। मनुष्य क्या यहां तक कि पशु पक्षी भी आजाद रहना पसंद करते हैं। हम तो सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान प्राणी इंसान है। इसी भावना को लेकर हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुति देकर हिंदुस्तान को आजादी दिलाई थी।

इस बार समूचा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। अर्थात समुद्र मंथन रूपी आजादी के आंदोलन से स्वतंत्रता का जो अमृत मिला है। इसे हमें घर- घर, नगर नगर, डगर- डगर गांव गांव, गली- गली तक बांटना हैं। आजादी के अरमान जो अधूरे रह गए। उन्हें पूरा करना है। हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। स्वच्छंदता नहीं, हम मुक्त हुए हैं। उन्मुक्त नहीं, यदि हमें संविधान में मौलिक अधिकार प्रदान किए हैं, तो मूल कर्तव्य भी विधान में निहित है। मंजिल की प्रथम सीढ़ी मूल कर्तव्य है। अगला सौपान मौलिक अधिकार। कर्तव्यों का पूर्ण निष्ठा से पालन कर लिया जाए, तो अधिकारों के लिए लड़ने की संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं है। कुछ कर्तव्य लिखित है, कुछ अलिखित है। सर्वप्रथम तो हमारा कर्तव्य बनता है कि स्वच्छता अपनाएं। अपने घर गली मोहल्ले को स्वच्छ साफ सुथरे रखने का संकल्प हमें आजादी के पर्व पर लेना ही चाहिए। फिर आगे बढ़ें तो जीवित रहने के लिए प्राणों को बचाने के लिए प्राणवायु मूल आवश्यकता है । इसका चिंतन करें कि विगत 7 दशकों में प्राण वायु का घनत्व कितना घट गया है। कोरोना की क्रूरता ने हमें अपना आईना दिखा दिया कि प्राणवायु ऑक्सीजन है कि बिना मनुष्य का अस्तित्व भी नहीं है और कोरोना की दूसरी लहर में हमारी आंखों के सामने ही आंखों के प्यारे चल बसे। हम हाथ पर हाथ धरे बैठे ही रह गए। पेड़ लगाए, संरक्षण करें, यह हमारा कर्तव्य बनता है ।

आज हम आजादी की खुली हवा में सांस ले रहे हैं, यह सब भारत माता के इन सपूतों की याद दिलाता है, जिन्होंने अपना सर्वस्व देश के नाम न्यौछावर कर दिया था। भारत के प्रसिद्ध विद्वानों कवियों इतिहासकारों अथवा लेखकों ने भारत का सामाजिक रूप से सुधार करके भारत की आजादी में चार चांद लगाए थे।

15 अगस्त भारत देश के गर्व और हर्ष का दिवस है । यह हमारे हृदय में नवीन स्फूर्ति, नवीन आशा, उत्साह तथा देश भक्ति का संचार करता है। स्वतंत्रता दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि हमने कितनी कुर्बानियां देकर यह आजादी प्राप्त की है, जिसकी रक्षा हमें हर कीमत पर करनी है, चाहे इसके लिए हमें प्राणों का त्याग क्यों ना करना पड़े। भारतवर्ष को पहले की भांति सोने की चिड़िया बनाना है तथा आजादी का सही अर्थ समझना चाहिए प्रत्येक भारतीय को अपने अधिकारों से ज्यादा अपने कर्तव्य का पालन करना होगाए तभी हमारा देश पूरे विश्व में एक महान शक्ति बनकर सामने आएगा, यही हमारा मुख्य ध्येय हैं, इसे बनाए रखना है।

आओ झुक कर सलाम करें उन्हें,
जिनकी जिंदगी में मुकाम आया है।
किस कदर खुशनसीब हैं वो लोग,
जिसका लहू भारत के काम आया है।।

जय हिंद, जय भारत

नारायणसिंह राव निराकार
साकेत साहित्य संस्थान
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 89490-18464

75 साल की आजाद सड़क

आदमी सड़क पर चलते हुए हमेशा खुश रहता है। कुछ तो सड़क पर चल भी नहीं पाते। जमीन पर बैठे- बैठे हाथ पसार देते हैं। वे हमेशा सड़क पर ही रहते हैं। उनका सड़क पर आना कोई नई बात नहीं है। जो सड़क पर चलते हैं, उन्हें विकास की मुख्य धारा माना जाता है, जो चल नहीं पाते वे हाशिये पर होते है। हाशिये पर खड़ा आदमी ही अर्थव्यवस्था का पत्थर है।

75 साल हो गए सड़क को। स्वतंत्रता के बाद। जहां थी, वैसी ही है। सड़क बुढा गई है। गुलामी की जवानी किसे याद रहती है और फिर जवान थी क्या? सड़क तो पैदा होते ही बुढ़ा गई। उसका अन्न पानी ठेकेदारों ने लील लिया। तीज त्यौहार पर मरम्मत कर चेहरे की लीपापोती कर दी जाती। इस पर चलने वाले सब स्वतंत्र हैं। जब चाहें सड़क बदल लेते हैं। सड़क आज भी गुलाम है। आजादी के लिए तरस रही है।

पगडंडी से जब सड़क बनी, बड़ी खुश थी। उसके किनारे मील का पत्थर गाड़ा गया। यह उसके सड़क होने की पहचान थी। माथे की बिंदी थी। मिट्टी से उबटन किया गया, पानी से नहलाया गया, नजर न लग जाए। इसलिए डामर से श्रृंगार पूरा हुआ। उसे नहीं पता, यह श्रृंगार वधु का है या नगरवधू का। स्कूली बच्चों ने तो उद्घाघटन से पहले ही साइकिल दौड़ा दीं।

सड़क सोचने लगी, आखिर इन 75 सालों में कौन आजाद हुआ? जो अंग्रेजों के गुलाम थे, वे अब भी गुलाम हैं। बाबू पहले भी पैदा हो रहे थे, अब भी हो रहे हैं। नेताजी कह रहे थे- हमने सड़कों का विकास किया है, आदमी का विकास किया है, हाशिये पर खड़े आदमी को सड़क पर ला दिया है। कितना प्रसन्न है सड़क पर खड़ा आदमी। चिंता मुक्त है। वह आजाद है, रोजगार ढूंढने के लिए, भूखों मरने के लिए, गांव से पलायन के लिए। बुक्का फाड़ आजादी और कितनी आजादी चाहिए। आजादी मिली है भ्रष्टतंत्र और भ्रष्टाचार को। कोई रोकने वाला नहीं है, सभी स्वतंत्र हैं। आजादी का सबसे बड़ा सबूत संसद में बैठा बेरोजगार करोड़पति और रोजगार हासिल तरस रहा दो जून की रोटी को।

75 साल की आजादी के बाद भी सड़क बोल्डर, डामर के लिए आम आदमी की सुविधाओं की तरह हाशिये पर पड़ी है। इन 75 सालों में 15 बार भी उसका ढ़ांचा बना शरीर वैसा ही खड़ा है। आजाद जो थे वे और आजाद होते गए। किसान गुलाम बने फिर मजदूर बनते गए। बेरोजगार चौराहों पर सुबह सुबह गुलामी की प्रतीक्षा में खड़े होने लगे। गुलामी में हरिया का नाम गुल हो गया। उसकी पहचान चौक बन गई। उसकी दुकान चौक। घर, मुहल्ला, सब चौंक हो गया। इस आजादी में उसकी कमीज उतर गई। मंदिर छूट गया, चौपाल गायब हो गई। खेत की छाती पर मशीन दौड़ने लगी। मशीन के आते ही हरिया गांव से बेआबरू होकर शहर आने के लिये आजाद कर दिया गया। सड़क अभी तक आजाद नहीं थी।

75 साल की सड़क का दिल कमजोर हो गया। गड्ढों से लकवा जैसी स्थिति, चेहरे पर झुर्रियां। अचानक एक दिन हाइवे बनने की खबर आई। सड़क के पास से हाइवे गुजर गया। अब सड़क आम आदमी की तरह हाशिये पर आ गई। मजबूरी ही उसका उपयोग करती। जब कोई बड़ा वाहन गुजरता उसके हाथ सलामती के लिए जुड़ जाते। हाशिये पर आई सड़क लावारिश लाश की तरह पड़ी है। वह बंजर भूमि है, जिसका कोई मालिकाना हक नहीं लेना चाहता। बरसात, गर्मी, सर्दी में भी अकेली नहीं रहती।कोई न कोई वाहन एक्सल तुड़वा कर उसकी छाती पर खड़ा होता।

हाशिये पर खड़ा आदमी और सर्विस लाइन की सड़क की दशा एक जैसी है। हाइवे नेताजी की सवारी है, तो मजदूर की मजबूरी की तरह है, किनारे पड़ी सड़क।

सर्विस लाइन की सड़क और हाशिये पर खड़े आदमी की दशा कौनसी आजादी का इंतजार कर रही है ?

सुनील जैन 'राही'
वरिष्ठ व्यंग्यकार, नई दिल्ली
मो. 98109-60285

21 अगस्त जयंती विशेष

स्वतंत्रता संग्राम के दीवाने प्रो. नारायणदास बागोरा

यह कहा जाता है कि कुछ लोग महान पैदा होते हैं और कुछ लोग महानता अर्जित करते हैं। प्रो. नारायण दास बागोरा ऐसे ही व्यक्ति थे, जिनमें यह गुण जन्म से संस्कार में मिले थे और जीवनभर उन गुणों में दिनोंदिन वृद्धि होती गई।

प्रो. नारायण दास बागोरा का जन्म भादवा कृष्ण दशम् दिनांक 21 अगस्त सन् 1889 को नाथद्वारा में हुआ था। पिता श्री कृष्ण बागोरा एक प्रसिद्ध ज्यातिषी थे। बाल्यकाल में 11 वर्ष की उम्र में ममतामयी माता श्रीमती यशोदा देवी की विधाता ने गोद छीन ली। उस समय नाथद्वारा में शिक्षा का प्रबन्ध भी सामान्य था और स्कूलों का अभाव था।

छोटी उम्र में वात्सल्य छिन जाने पर पूज्य बापू के क्रीड़ा स्थल सोराष्ट्र में स्थित जाम खंभालिया में कोटा महाराज के मन्दिर जूनी हवेली नियुक्त स्वयं के काका श्री रामलालजी अधिकारी के पास पहुंचे गए।

मद्रास में 7 वर्ष रमल व जादू के चमत्कार श्री आत्मानन्द जी महाराज से प्राप्त किया। साथ ही मैजिक के प्रयोग संसार प्रसिद्ध जर्मनी मैजीशियन चेंगलीन सौ. एवं प्रो. एलके शाह से प्राप्त किए। सन् 1920-21 में असहयोग आन्दोलन के कारण, ब्रिटिश साम्राज्य शाही से असहयोग स्वरूप लाखों छात्रों ने स्कूल व कॉलेज छोड़कर साथ लगे थे। पं मोतीलाल नेहरू, श्री पुरूषोत्तमदास टंडन, श्री देशबन्धु चितरंजन दास जैसे लोगों ने वकालत ठुकरा दी। ऐसे ही समय में प्रो. नारायणदास बागोरा कलकत्ता में अपने पूर्व परिचीत स्नेही श्री मूलजी भाई सिक्का से मिले। वहां बापू से भी मिले। बापू ने उनसे मेवाड़ की स्थिति जानी। अहमदाबाद में राष्ट्रीय कांग्रेस का महाअधिवेशन चल रहा था। प्रो. अपने साथियों के साथ वहां गए। अपने पहनावे में खादी को अपनाया और राष्ट्र सेवा एवं जन जागृति का वृत लिया।

मेवाड़ के बेगू तथा बिजोलिया आदि स्थानों में चल रहे जन आन्दोलनों के प्रणेता श्री विजयसिंह पथिक, आदिवासी नेता श्री मोतीलाल तेजावत व श्री माणिकलाल वर्मा आदि से आपका परिचय हुआ। इन्होंने अपने बचपन के साथियों के साथ सन् 1928 में एक सक्रिय संगठन गठित किया। राजनैतिक गतिविधियों के कारण सन् 1930 में साथी रघुनाथजी के साथ इन्हें बंदी बना दिया गया।

सन् 1938 में राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ मेवाड़ में भी क्रान्ति का उदय हुआ। मेवाड़ प्रजामंडल में योजनाबद्ध कार्य करने के लिए नाटक लिखे, शोभायात्रा निकाली और अपने साथियों के साथ संघर्ष को तेज किया।

10 अक्टूबर 1938 को सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुए किशनलाल शर्मा, भगवानदास गुर्जर को चौपाटी पर गिरफ्तार कर दिया। छात्र श्री जमनादास गुर्जर, चिमनलाल गुर्जर (भाला वाला) किशनलाल गुर्जर चौधरी, रोड़ीलाल गुर्जर, रामसिंह चौधरी, जुगलकिशोर, छन्नूलाल चौधरी आदि बंदी बनाए गए।

प्रो. नारायण दास बागोरा प्रथम डिक्टेटर के रूप में सत्याग्रह हेतु सपरिवार निकल पड़े। प्रत्येक सदस्य के पास तिरंगा ध्वज एवं गाय- भैंसो के सींगो पर तिरंगाध्वज बंधे थे। जुलूस भारी पुलिस बल जाप्ते के साथ था। अतः कोई गिरफ्तारी न कर सके। शाम को स्वयं बागोरा ने पुलिस स्टेशन पहुंच अपनी गिरफ्तारी दी। साथ में इनकी पत्नी श्रीमती रूक्मणीदेवी भी थी। प्रो. की गिरफ्तारी के बाद जुलूस की जिम्मेदारी रघुनाथ पालीवाल पर आपड़ी।

सन् 1939 के वर्षान्त में प्रो. श्री नारायणदास बागोरा, रघनाथ पालीवाल, राधाकृष्ण पालीवाल, द्वारिकादास पुरोहित एवं नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी बम्बई में होने वाले देशी राज्य लोक परिषद की कार्यकारिणी की बैठक में गए। जिसकी अध्यक्षता स्वं पं. जवाहरलाल नेहरू कर रहे थे, सम्मिलित हुए। मेवाड़ प्रजामंडल व मेवाड़ की रियासतो का श्री उससे संबंध कराया।

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

स्व. सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा जानकारी मांगने पर प्रो. बागोरा की आज्ञानुसार पंडित पालीवाल ने मेवाड़ में प्रजामंडल की स्थिति प्रस्तुत की। उन्हीं दिनों मेवाड़ में अकाल पड़ा और अकाल समिति मेवाड़ में बनाई गई, जिनमें प्रो. तथा पालीवाल स्व. नन्दलाल जोशी कोषाध्यक्ष, चतुर्भुज भाटिया सदस्य, नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी, नारायण-नारायण, भगवानदास, मोहनलाल वैद्य, मोती लाल त्रिवेदी, जय कृष्ण त्रिवेदी (कांकरोली), मन्नालाल सिसोदिया नाथद्वारा चुने गए। प्रो. नारायणदास के नेतृत्व में समिति ने सफलतापूर्वक कार्य किया।

उक्त सभी क्षेत्रों में प्रो. साहब एवं पालीवाल की सक्रियता देखकर सन् 1937 में तत्कालीन न्यायाधीश पं. शिवकुमार शास्त्री ने उन्हें प्रेरित किया कि साहित्यिक क्षेत्र को गति दी जाएं। इन्होंने साहित्य मंडल की स्थापना की। उपाध्यक्ष पद पर प्रोफेसर साहब को बनाया गया। सन् 1938 के राजनैतिक आन्दोलन के कारण इसमें अवरोध आया, फिर प्रगति होने लगी। पं. शिवकुमार शास्त्री के निर्देशन में मोहन सिंह मेहता (तत्कालीन मेवाड़ राज्य के दीवान) के सहयोग से प्रो. बागोरा व पं. रघुनाथ पालीवाल, बलदेव सत्य आदि के अनवरत प्रयासों से संस्था प्रगति पथ पर चल पड़ी। गोस्वामी महाराज नाथद्वारा यह देख प्रसन्न हुए और मोती महल मार्ग पर भवन साहित्य मंडल हेतु प्रदान किए और (गांधी सार्वजनिक उद्यान) में भी भूमि प्रदान की। फतहलाल बापू भी इनके साथ स्वतंत्रता भावना से जुडे रहे।

मेवाड़ पुलिस ने देवली के पास जब श्री माणिक्यलाल जी वर्मा को ब्रिटिश शासन की सीमा में गिरफ्तार कर लिया, तो मेवाड़ प्रजामंडल को सारी जिम्मेदारी मादड़ी निवासी नन्दलाल जी जोशी पर आ पड़ी। जोशी के लघु भ्राता जमना प्रसाद जी उदयपुर जिले में प्रचार कर रहे थे। उस वक्त नन्दलालजी जोशी तथा श्रीमती नारायणी देवी आन्दोलन का विवरण प्रस्तुत करने बापू के पास वर्धा पहुंचे तथा आशीर्वाद प्राप्त कर अजमेर लौट आए।

प्रो. नारायण दास बागोरा अपनी सजा काटकर नाथद्वारा लौटे तो जनता ने जुलूस के साथ स्वागत किया। प्रो. के लिये फिर भी चुप बैठना गवारा नही हुआ और पुनः समाज सेवा में लगे रहे। सन् 1942 के आन्दोलन के लिये प्रो. नारायण दास बागोरा गांधीजी से आशीर्वाद प्राप्त करने माणिक्यलाल वर्मा व भूरालाल बया के साथ वर्धा पहुंचे व सेठ जमनालाल बजाज के यहां ठहरे। सेवाग्राम जाकर बापू से आशीर्वाद लीया तो बापू ने उन्हें कहा कि शक्ति के साथ आन्दोलन करो और पूर्ण विश्वास के साथ बापू को इन्होंने आश्वस्त किया। सन् 1942 के अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन में कूद पड़े। मेवाड़ राज्य में आन्दोलन ने जोर पकड़ा और प्रो. को नाथद्वारा स्थित समाधानी जी को बाड़ी में नजर कैद कर दिया गया। वहां कुछ अस्वस्थ भी रहे तो वहां से जूनी बाडी ले जाया गया।

आन्दोलन में दोनो बागोरा व पालीवाल 21 अगस्त 1942 को ओजस्वी कार्यकर्ता नरेन्द्रपालसिंह चौधरी, फतहलाल बापू, मनोहर कोठारी, छन्नूसिंह चौधरी आदि को रात्रि में घरो पर बंद कर दिया गया। बाद में फूलचन्द पोरवाल, किशन लाल गुर्जर आदि सत्याग्रह करते जुलूस रूप में स्कूल से चौपाटी बाजार पर पहुंचे तथा वहां भाषण देने के साथ ही उन्हें बन्दी बना दिया गया। यह सत्याग्रह कर्ता सभी साथियों को श्री सरस्वती देवी बागोरा ने पुष्पहार अर्पित किए एवं तिलक लगाकर विदाई दी। इन सभी को बन्दी बनाकर सेन्ट्रल जेल उदयपुर भेज दिया। 15 दिन बाद इन्हें सेन्ट्रल जेल से बिना मुकदमा चलाये सन् 1938 के आन्दोलन के तहत ईसवाल के महलों में बन्द कर दिया। जहां एक से डेढ़ महीने की अवधि तक कैद रखा तथा फिर रिहा कर दिया। ईसवाल में 50 बंदी रखे गये थे, जिनमें नाथद्वारा क्षेत्र के अतिरिक्त सर्व श्री नन्दलाल जोशी, मास्टर बलवन्त सिंह मेहता, मोतीलाल तेजावत तथा भूरालाल बया आदि उल्लेखनीय है। इनके साथ-साथ नाथद्वारा के विद्यार्थी थे।

आपने राष्ट्रीय आन्दोलनों में पूरा जीवन लगा दिया और अपने मेसमेरिजम के चमत्कारों से कई राष्ट्रीय गोल्ड मेडल प्राप्त किए। समाजसेवा, मंदिर मंडल की सेवा, साहित्य सेवा में अग्रणीय रहे प्रो. नारायण दास बागोरा ने अपने पुत्र रामचन्द्र को भी रमल विद्या सिखाई तथा कई नगर के लोगों के हित के कार्य किए। पूरा परिवारजन आन्दोलन की भेंट चढ़ा। यही इनकी विशेषता रही। यह लेखक, वक्ता, नेता जादूगर समाजसेवा व्यक्तित्व थे। सदियों तक इन्हें हम नहीं भूल जाएंगे। शतरंज के अच्छे खिलाड़ी जादूगर ने कई लोगों को अपने चमत्कारों से सम्मोहित कर उनके हृदय में स्थायी स्मृतियां बनाई, जो चिर स्मरणीय रहेगी। लम्बी उम्र कर आपने राष्ट्रहित में लगा कर लगभग 84 वर्ष के आसपास अपनी जीवन यात्रा पूरी की। ऐसे राष्ट्रीय सपूत जादूगर प्रोफेसर साहब को हमारी श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित है।

जमाना याद करेगा, तुम्हारे हुनर को,
तुम इंसा नहीं, मुझे फरिश्ते लगते हो।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार
जाट गली, कांकरोली
मो. 99286-25757

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से
आप जयवर्द्धन
मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं
वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।
भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉर्डन स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
उत्तरप्रदेश - एस.एन. कुंवर - 77259-99777
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

नए शहरों की पुरानी पहचान

श्रीनाथजी और श्री द्वारकाधीश के क्रमश: सिंहाड़ और आसोटिया पधारने की घटना एक सद्गृहस्थ परिवार के मुखिया का संकटों से अपने परिवार को बचाने के लिए सुरक्षित स्थान खोजकर निरापद जीवन यापन करने के लक्ष्य को लेकर थी। प्रभु द्वय के इसी सहज पारिवारिक मुखिया के स्वरूप को स्थानीय ग्रामीणों ने सहज स्वीकार भी कर लिया था और इन आराध्यों के साथ आए ब्रजवासियों ने इसी भक्तिभाव का परिचय मुगल शासक औरंगजेब से अपने आराध्यों को बचाने में दिया था। इतिहास प्रमाण है कि पारिवारिक संघर्ष के चलते किस तरह एक बार अपने ही कुटुंब के ब्रजराय जी द्वारा आगरा जबरन ले जाए जाने के बाद द्वारकाधीश को ससम्मान पुन: गोकुल लाकर पाट पर बिराजित किया गया और कालान्तर में पुन: द्वारकाधीशजी को गोकुल से अहमदाबाद होकर मेवाड़ में सादड़ी में अल्पकालीन प्रवास कर आसोटिया पधराया गया था। दूसरी ओर प्रभु श्रीनाथजी वि.सं 01549 से लेकर वि. सं. 1726 लगभग 177 वर्ष गिरिराज पर्वत पर बिराजने के बाद आगरा से दंडौती धार (ग्वालियर), कोटा, कृष्णगढ़ (किशनगढ़), बंबाल, बीसलपुर (जोधपुर), चौपासनी होकर सिंहाड़ पधारे। कहते हैं, पुष्टिमार्ग के विग्रहों के ब्रज से पलायन पर औरंगजेब बौखला गया और गिरिराज स्थित मंदिर को ध्वस्त करने को आक्रामक हो गया। ग्रामीण ब्रजवासियों ने जिस शौर्य का परिचय अपना बलिदान देकर दिया, वह इतिहास में अलिखित ही रह गया। विभिन्न वार्ताओं में श्रीनाथजी की जलसेवा करने वाले उन सेवकों का वर्णन है, जो धर्म रक्षण के लिए मुगल सेना के विरुद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। ब्रज से मेवाड़ स्थानांतरित होने का यह समय राजाओं, धर्माचार्य और जन जन के प्रयासों की संयुक्त गाथा सुनाता है।

मेवाड़ क्षेत्र पुष्टिमार्ग के आचार्यों के लिए मेवाड़ आगमन से पहले ही यहां के धर्मनिष्ठ राणाओं की धर्म रक्षण की प्रवृत्ति को देख सामरिक और धार्मिक दृष्टि से संरक्षित क्षेत्र माना जाता रहा था। जैसे महाराणा जगतसिंह जी ने अपनी ब्रजयात्रा के समय गिरिधरजी महाराज से दीक्षा ले मेवाड़ की राह प्रशस्त कर दी थी। उससे भी पहले श्री वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथजी ने अपनी द्वारकायात्रा के दौरान सिंहाड़ स्थल को भविष्य में श्रीनाथजी के लिए सुरक्षित लीला स्थली होने की भविष्यवाणी ही कर दी थी।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, ब्रज निधि श्रीनाथजी और द्वारकाधीश को ब्रज से मेवाड़ स्थानांतरित करना ब्रजवासियों के अत्यंत दु:ख का कारण था, लेकिन वयोवृद्ध महादेव के नेतृत्व में अधिसंख्य ब्रजवासियों के संबलन और आचार्य परिवारों की अहर्निश सेवा के साथ विपरित राजनीतिक परिस्थितियों में यह सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक स्थानांतरण कितना लोमहर्षक रहा होगा, यह कल्पना की जा सकती है।

पुष्टिमार्ग की निधियों के मेवाड़ आगमन की घटना आकस्मिक नहीं कही जा सकती है। इसकी पृष्ठभूमि में श्री गिरिधरलालजी महाराज के समय महाराणा जगतसिंह जी का तृतीय

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

पीठ से शिष्यत्व ग्रहण करने का प्रसंग तो है ही, गोकुल स्थित द्वारकाधीश मंदिर में आसोटिया से आने वाले अनाज से सामग्री बनने का उल्लेख भी इन पारस्परिक संबंधों की पुष्टि करता है। कालांतर में इन्हीं सूत्रों के चलते गिरिधरजी महाराज के दत्तक पुत्र ब्रजभूषण जी को तो **आसोटिया वारे** नाम से ही जाना जाने लगा। आसोटिया का ठिकाना होकर खालसा होना और द्वारकाधीश के मेवाड़ प्रवेश से पूर्व यह देवस्थान होना इतिहास विश्रुत है।

आसोटिया और आसपास का मजरा खाकाडोली और सिंहाड़ क्षेत्र के नए स्वरूप की संरचना का यह समय उल्लेखनीय है। क्योंकि अनजाने ही भविष्य के भारत प्रसिद्ध तीर्थों के रूप में विकसित शहरों की कल्पना इन उपेक्षित ग्राम्यांचलों ने भी नहीं की होगी। विशेषकर यह समय मेवाड़ में भीषण अकाल का था और ठाकुरजी के पधारने की तैयारी स्वरूप आसोटिया में मंदिर और बावड़ी के निर्माण सहित राजसमुद्र का निर्माण कार्य भी प्रारंभ हो चुका था। यह एक प्रकार से अकालग्रस्त इस क्षेत्र के लिए वरदान स्वरूप रहा।

सिंहाड़ के समीप सदानीरा बनास के कारण नाथूवास और सिंहाड़ के जलाशयों का भराव तो संतुष्टिदायक था, तथापि इन जलस्रोतों के पुनर्वीकरण के कार्य का समारंभ भी श्रीनाथजी के आगमन के समय ही शुरु हो गया था।

विक्रम संवत 1716- 1718 की अवधि इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण थी। क्योंकि इसी समय राजनगर खालसा की पहाड़ी पर उदयपुर के महाराज कुमार अमरसिंह (राणा राजसिंह के सुपुत्र) द्वारा महल और कांकरोली की पहाड़ी पर मंदिर बनना प्रारंभ हो चुका था। वि. सं. 1832 तक राजनगर गांव नए आकार में विकसित हो चुका था। इस क्रम में विक्रम संवत 1755- 1776 के मध्य मंदिर के किनारे किनारे आसोटिया के ऊपर पाल पर कांकरोली गांव बसना भी शुरु हो गया था। इस प्रकार प्रथम आसोटिया में मंदिर और बावड़ीएफिर राजनगर और फिर कांकरोली गांव का विकास यह ढांचागत विकास का क्रम रहा।

यहां उल्लेखनीय है कि सिंहाड़, आसोटिया, कांकरोली और खमनोर (द्वितीय पीठ के विद्वान आचार्य जिनका उल्लेख हम आगामी अंकों में करेंगे) मेवाड़ के राणाओं की ष्जन धनष्संरक्षण की लोकतांत्रिक व्यूह रचना के चिह्नित केन्द्र थे जो शनेरूशनेरूआज समृद्ध नगरीय ढांचे के रूप में हमारे समक्ष हैं।यदि आज सिंहाड़ औरआसोटिया नगर संरचना की अंधाधुंध दौड़ में अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं तो यह हमारी इतिहास दृष्टि के प्रति अज्ञान या उपेक्षा का द्योतक है।नयी पीढ़ी को यह संज्ञान कराना आवश्यक है कि सिंहाड़ का श्रीनाथजी का वह प्राचीन निवास व मंदिर कहां है जहां वर्तमान मंदिर के बनने की मध्यावधि में ठाकुर जी ज्यों त्यों बिराजेएआसोटिया के उस प्राचीन मंदिर और बावड़ी की स्थिति आज क्या हैएदेवल मगरी क्यों अब केवल एक ष्ऐतिहासिक संज्ञाष्बनकर रह गयी हैएकितने हैं जो विद्या वारिधि गो0हरिरायजी की विद्यानुरागिणी खमनोर बैठक के माहात्म्य को जानते हैंष्नगर नियोजकों को इन स्थलों को संज्ञान में लाकर इन्हें धरोहर संरक्षित क्षेत्र के रूप में विकसित करना चाहिये।यह हमारा सांस्कृतिक कर्तव्य बनता है। **शेष........**

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

गोल्डमेडलिस्ट मंतरिया बाबा

सरकारी से निजीकरण के विकास मार्ग पर प्रगतिशील भारतीय रेल में जब भी आपको कुछ करने का सौभाग्य प्राप्त होता है तो चलती ट्रेन में कुछ परमानेंट प्राकृतिक दृश्य स्वतः ही उभरने लगता है। यथा आरक्षित बोगी में वेटिंग टिकट को कन्फर्म कराने के लिए आधा दर्जन फरियादी यात्रियों से घिरा इकलौता टीटीई, हिमेश रेशमिया ध्वनि की तीव्रता के साथ गरम चाय, मुंगफली, बादाम चिल्लाता गैर लाइसेंसी वेंडर, ताली पीट- पीटकर पैसा वसूलती 'लक्ष्मी' की टीम, बाबू इक पैसा दे दो का उद्घोष करता याचक सूरदास, आरक्षित बर्थ पर अपने लैपटॉप और मोबाइल में व्यस्त बोनाफाइड पैसेंजर। वहीं जनरल डिब्बों में खैनी रगड़ता यात्री, विभिन्न मोबाइलों पर एक साथ बज रहे भोजपुरी, हिंदी, गजल- भजन वाली तेज गानों की मिश्रित आवाज, चार सीट वाले स्थान पर थोड़ा थोड़ा साइड खिसकाकर बैठने वाला पांचवा- छठा लोकल या लेडीज पैसेंजर, डायरेक्ट ऑक्सीजन ग्रहण करने की मुद्रा में गेट पर बैठा श्रमिक यात्री, हनुमानजी की तरह समुद्र को लांघकर लंका पहुंचने वाली स्थिति की तरह भीड़ स्पेशल ट्रेनों में फर्श पर लेटे- बैठे दर्जनो यात्रियों को लांघकर टॉयलेट तक पहुंचने की जद्दोजहद करता इमर्जेंसी इशू वाला यात्री आदि। ये तो हो गया लाइव नजारा आइए अब आपको चलती ट्रेन के स्थिर कथानकों से भी परिचय करवाते हैं।

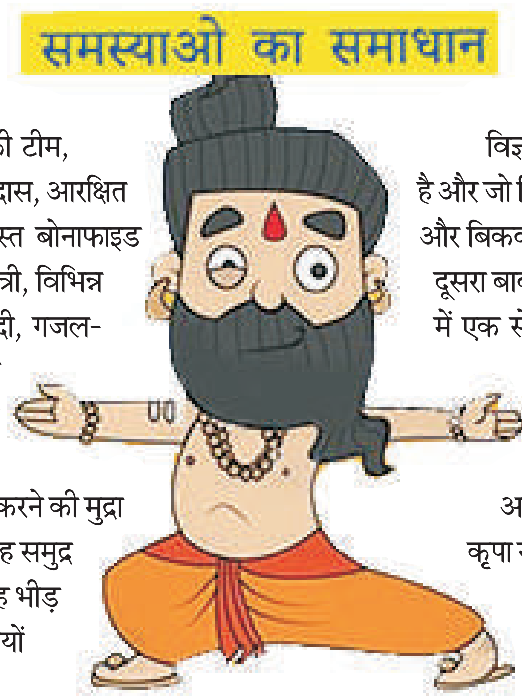

जनरल बोगी की दीवार अपने आप में विज्ञापन की चलती फिरती अद्भुत दुकान है। टीवी मोबाइल का विज्ञापन समय उपरांत बदलता है, लेकिन तीस मिनट से तीस घंटा तक के सफर में नेताओं के फितरत की तरह रेलवे की दीवारों पर सरकारी एवं गैर सरकारी विविध विज्ञापनों से की गई नक्काशी अपरिवर्तनीय रहती है। दीवार पर खींचने वाले चेन के नीचे बेवजह चेन खींचने एवं यात्रा के दौरान सिगरेट- बीडी के तलब गारो के लिए वैधानिक विज्ञापन तो छात्र, बेरोजगार, रोगी आदि हर उम्र के लोगों के लिए लाभकारी स्टिकर वाला स्व प्रमाणित विज्ञापन, रिजल्ट की शत प्रतिशत गारंटी वाली कोचिंग का विज्ञापन, बेरोजगारों के लिए घर बैठे पंद्रह से पचास हजार रुपए कमाई का मौका दे रही संस्थान का विज्ञापन, मुफ्त मोतियाबिंद इलाज, चर्म रोग, डायबीटीज, बिना टीका चीरा के ऑपनरेशन, शराब छुड़ाई, कब्ज से गुप्त रोग तक का शर्तिया इलाज वाले विज्ञापनों का सामंजन आपको भारत में विविधता में एकता का संदेश देती नजर आएगी। जिन पर ना चाहते हुए भी तीन घंटे के सफर में तीन सौ बार आपकी नजर जानी ही जानी है। वैसे भी टीवी का विज्ञापन रहे, तो रिमोट से चैनल बदला जा सकता है। पेपर का विज्ञापन हो तो पेज को बदला जा सकता है, पर मशक्कत से प्राप्त दुर्लभ ट्रेन सीट को बदलने का रिस्क भला कौन ले !

विज्ञापन से याद आया कि जो दिखता है, वही बिकता है और जो दिखाता है, वही बिकवाता है। हमारे देश में दिखाने और बिकवाने वाली मानवीय प्रजाति दो ही है- पहला नेता, दूसरा बाबा। नेता की चर्चा के लिए भारतीय व्यंग्य साहित्य में एक से एक महाग्रंथ उपलब्ध है, तो चलिए आज के प्रसंग में बाबाजी पर ही थोड़ी बहुत मगजमारी की जाए। इंडिया बाबाओं का देश है। जंगल, जेल से रेल तक हर वेरायटी के बाबा यहां अवेलेबल हैं। बात रनिंग ट्रेन की हो और बाबा की कृपा रूक जाए।

ऐसा कदापि संभव नहीं। रेल यात्रा के दौरान आपको दशको से मंदिर निर्माण को कृत संकल्पित चंदा मांगते या भिक्षाटन करते हुए बाबा मिले ना मिले, लेकिन टोटल समस्या समाधान वाले गोल्ड मेडलिस्ट स्टिकर बाबा का विज्ञापन मिलना ही मिलना है। सकल बाधा हरने वाली विज्ञापन में इनके वास्तविक नाम की बजाय किराए या उधार पर लिया गया जनकल्याणकारी भाव वाला नाम लिखा रहता है, जिसके आगे गोल्ड मेडलिस्ट होने का उल्लेख किया जाता है। पर बाबाजी को ये गोल्ड मेडल शिक्षा, मैराथन, तीरंदाजी या जुमलेबाजी के क्षेत्र में मिला है, इसका कहीं उल्लेख नहीं रहता। संभवतः स्टिकर में स्थान अनुपलब्धता या प्रति शब्द छपाई की कीमत का अतिरिक्त भार की वजह से इसका उल्लेख करना मुनासिब ना समझते हों।

वैसे इनके मेडलिस्ट होने पर ज्यादा मगज नहीं खपाने का, क्योंकि तंतर- मंतर से जब खोया प्यार, जायदाद, जवानी, ऐश्वर्य सबकुछ हासिल हो सकता है, तो नामुराद गोल्ड मेडल कौनसी बड़ी चीज है। इनके स्टिकर पर स्वयं या इनके रामबाण क्लिनिक, दफ्तर, संस्थान की तस्वीर ना होकर शिरडी के साईं की तस्वीर उसी तरह लगी रहती है, जिस तरह

भारत सरकार के सरकारी पत्र पर राष्ट्रीय चिह्न अंकित रहता है। पता और स्थान का उल्लेख नहीं रहता। संभवतः आधार कार्ड से लिंक नहीं होने की वजह से स्थाई पता की तलाश में बाबा का ठिकाना सदैव परिवर्तनशील रहता है। स्टिकर में अंकित दो- तीन मोबाइल नम्बर ही चिकित्सा पद्धति या समस्या समाधान का एकमात्र जरिया होता है। दूसरे की मां- बहन का कल्याण करने वाले ऐसे बाबाओं के मां की जय- जयकार मुक्त कंठ से होनी चाहिए। ये बाबा विशुद्ध सेकुलर होते हैं। क्योंकि इनके विज्ञापन मेनू पर क्रॉस, 786, ॐ सहित सभी धर्मो का प्रतीक चिह्न मुद्रित रहता है। ये स्वयंसिद्ध चमत्कारी बाबा कबीर के स्वघोषित वंशज होते हैं। क्योंकि कल करे सो आज कर, आज करे से अब... वाली नीति के ये पोषक होते हैं। जर- जोरू- जमीन के जिन दीवानी और फौजदारी मामलो का निष्पादन तारीख पर तारीख हॉलमार्क वाली संस्थान के जज वर्षो में भी नहीं कर सकते, उन मामलों का निपटान ये चुटकियों में करने का माद्दा रखते हैं।

ये शिव के कलयुगी अवतार होते हैं। इनके विज्ञापन में मानव के संहार की खुलेआम चर्चा होती है। इनके विज्ञापन में एक एक शब्दों से बनी पंक्तियां यमराज का सर्कुलर अथवा तानाशाह का फरमान जैसा प्रतीत होता है। विश्वास ना हो तो स्वयं आकलन कर लें, क्योंकि ये स्वयंभू बाबा फोन पर ही आधा घंटा के अंदर सौतन को तड़पते देखने का दंभ भरते है। जमीन जायदाद प्रेम पैसा के विवादों व दुश्मनों को मिटाने का अदम्य कार्य को महज चंद मिनटों में करने का शर्तिया दावा करते है। ये खुलेआम काला जादू के जानलेवा प्रयोग का प्रचार प्रसार करते हैं। मरने मारने का चैलेंज करते हैं, लेकिन मजाल क्या है। भारतीय संविधान का कोई कानून इन बाबाओं की जंतर तक उखाड़ सके।

भारतीय रेलवे एक्ट में भी ज्वलनशील वस्तुओं के साथ यात्रा करने पर दंड का प्रावधान तो है, लेकिन ज्वलनशील भड़काऊ विज्ञापन चिपकाने पर कोई विधान नहीं है। जब कानून को फर्क ही नहीं पड़ता तो हमें इसके विरोध की क्यों खुजली हो रही भाई। जब रेल सफर में बढ़े फोता या हाइड्रोसिल की प्रतीकात्मक चित्र वाली विज्ञापन देखने को हम अभ्यस्त हो चुके हैं, तो बाबा की बाबागिरी वाले विज्ञापन से कौनसा सेहत का इम्यूनिटी लॉस होने वाला है। ऐसे ही रनिंग ट्रेन की तरह इन बाबाओं की रनिंग संस्थान हमेशा रन करती रहे।

आमीन।

विनोद कुमार विक्की
व्यंग्यकार, बिहार
मो. 77659-54969

व्यंग्य

अनुबंधित साहित्यकार

महोदय 'स' आज रास्ते में मिल गए। कुछ झल्लाए से लग रहे थे। स्वभाव के अनुसार महोदय 'द' ने जोरदार अभिवादन उनकी ओर उछाला। दोनों साहित्यकार जो ठहरे तो शब्दों के अकाल का सवाल ही नहीं उठता। परंतु मिस्टर 'स' ने सामान्य सा जवाब दिया, जिसे सुनकर मिस्टर सोच में उसी तरह डूब गए, जैसे कुएं में बाल्टी डूब जाती है । वे सोचने लगे कि कल तक बड़ी ही गर्मजोशी से मिलने वाले मिस्टर 'स' आज छुईमुई जैसे क्यों हो गए ? थोड़ा सा कुरेदा जाए शायद इस राज़ से पर्दा उठ जाए ।

मिस्टर 'स' का असली नाम कुछ और था पर उनकी सकारात्मकता तथा हर मुसीबत को सामान्य समझने के कारण सब लोग उन्हें मिस्टर 'स' कहने लगे थे। उनका नज़रिया इतना सकारात्मक था कि उन्हें तीखी मिर्च भी शहद की तरह लगती थी और शहद का तो कहना ही क्या था। जो बात सारे शहर को अखरती थी, उसमें भी वे सुकून वाला एंगल खोज ही लेते थे। समाज में ऐसे व्यक्ति बड़े ही पूछदार होते हैं, क्योंकि वे अदृश्य को अपनी कल्पनाशक्ति से दृश्य में बदलने का माद्दा रखते हैं।

वैसे सकारात्मकता अच्छी होती है, लेकिन कोरोनाकाल में नकारात्मकता ने सबको चैन दिया है, जिसको भी डॉक्टर ने कहा कि आप निगेटिव हैं, तो वह इतना खुश होता कि मानो जगजीत हो गया है । जगजीत से मतलब श्चिट्ठी न कोई संदेश... वाले जगजीत से नहीं है, बल्कि विश्वविजेता से है। विश्वविजेता तो सिकंदर कहलाता था, पर कहते हैं, अंत में अपने हाथ ज़नाजे से बाहर दिखा गया था कि देख लो दुनिया वालों मेरे हाथ बिलकुल खाली हैं और जिन्होंने जीवनभर मेरे कसीदे पढ़े हैं, वे भी खाली हाथ ही जाने वाले हैं ।

कसीदे से याद आया कि मिस्टर 'स' कसीदागीरी में खूब माहिर हैं और कसीदा पढ़ने वालों के दुख तो चुटकी बजाते ही काफूर हो जाते हैं। आप लोग चुटकी की जगह गाल शब्द भी प्रयोग कर सकते हैं। उससे शायद बात ज्यादा समझ में आ जाए, क्योंकि चुटकी में आवाज कम होती है।

मिस्टर 'द' ने बहुत हिम्मत जुटाकर 'स' से परेशानी का कारण पूछने का प्रयास किया। क्योंकि रोबदारों के पिछलग्गुओं से बड़ी सावधानी से पूछताछ करनी चाहिए। मालिकों से अधिक वो रोबीले होते हैं । मिस्टर 'स' की आँखों में उनका अंतर्निहित दर्द छलछला आया और बोले- क्या बताएं 'द' महोदय, मैं तो त्रिशंकु की तरह लटक चुका हूं। पिछले सप्ताह एक फिल्म निर्माता हमारे पास आया और बोला कि हम फिल्म बनाना जानते हैं, पर कहानी लिखना नहीं आता। आपको कहानी लिखना आता है, पर आप उसे बेचना नहीं जानते हैं। इसलिए आपकी आय बढ़ नहीं रही है ।

यदि आप हमें हमारी जरूरत के अनुरूप कहानी देंगे, तो हम आय दुगुनी क्या चार गुनी कर देंगे। मैं तो पत्र पत्रिकाओं में कहानी छपवाकर अपने को तीसमारखां समझता था, पर यह ऑफर तो एकदम धमाकेदार था। उसी समय मन में विचार आया कि प्रेमचंद जी ने नाहक फिल्में लिखना छोड़ बनारस लौटकर गरीबी में जीवन काटे। मुझे लोग खोजकर लिखवाकर आय दुगुनी कर रहे हैं। उस वक्त ऐसा लगा किए पुराने सभी कहानीकार मेरे सामने कुछ नहीं हैं।

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

क्योंकि उन्होंने साहित्य सृजन कर दुख का चयन किया और एक मैं हूं जो साहित्य सृजन के जरिए धन का चयन करूंगा। जिसने भी यह परंपरा डाली है, उसका दिल से आभारी हूं।

मेरे हां कहते ही निर्माता जी ने एक सामने चमचमाती फाइल रख दी जिसे वो पहले ही तैयार करके लाया था और मैंने भी उसके भरोसे तथा स्वप्निल सुख में सराबोर होकर अनुबंध (कांट्रैक्ट) पर हस्ताक्षर कर दिए। अगले दिन उसका सचिव मुद्रित चार पन्ने थमा गया, जिसमें लिखा था कि आपको हमारे द्वारा बताई गई दुकान से इस क्वालिटी का कागज, पेन आदि खरीदना होगा, जिससे अक्षर मोती जैसे चमकने चाहिए। एक- एक पैराग्राफ की जांच हमारे वर्तनी विशेषज्ञ करेंगे। कहानी का कथानक, भाषा शैली, पात्रादि हम बताएंगे। आपको उसी के मुताबिक कहानी पैदा करनी है और आप अपने से कुछ भी नहीं डाल सकते हैं, भले ही वह आपके अनुसार अच्छा हो।

आप हमेशा यह याद रखेंगे कि आप और आपकी लेखन कला दोनों अनुबंधित हैं। इसलिए आप किसी अन्य पत्र- पत्रिका के नहीं लिखेंगे। यहां तक कि अपने लिए भी नहीं। थोड़ी भी होशियारी की तो डिफेक्टिव कहानी कहकर वापस कर देंगे। अनुबंध के अनुसार आपको मुआवजा भी देना पड़ सकता है। आप अदालत भी नहीं जा सकते हैं। क्योंकि अनुबंधानुसार अंतिम फैसला सेंसरबोर्ड के चेयरमैन करेंगे, जो हमारे अभिन्न मित्र हैं।

तब से मिस्टर 'स' का सिर भन्ना रहा है और वो विचार शून्य, शब्दविहीन हो गए हैं । मिस्टर 'द' ने सोचा हम छोटे- मोटे साहित्यकार ही भले हैं। अनुबंधन के चकल्लस से राम बचाएं। स्वांतः सुखाय से बेहतर कुछ नहीं है। का सिर भन्ना रहा है और वो विचार शून्य, शब्द विहीन हो गए हैं। मिस्टर 'द' ने सोचा हम छोटे मोटे साहित्यकार ही भले हैं। अनुबंधन के चकल्लस से राम बचाएं। स्वांतःसुखाय से बेहतर कुछ नहीं है।

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर हिंदी विभाग रामभद्राचार्य
विकलांग विश्वविद्यालय यूपी 8604112963

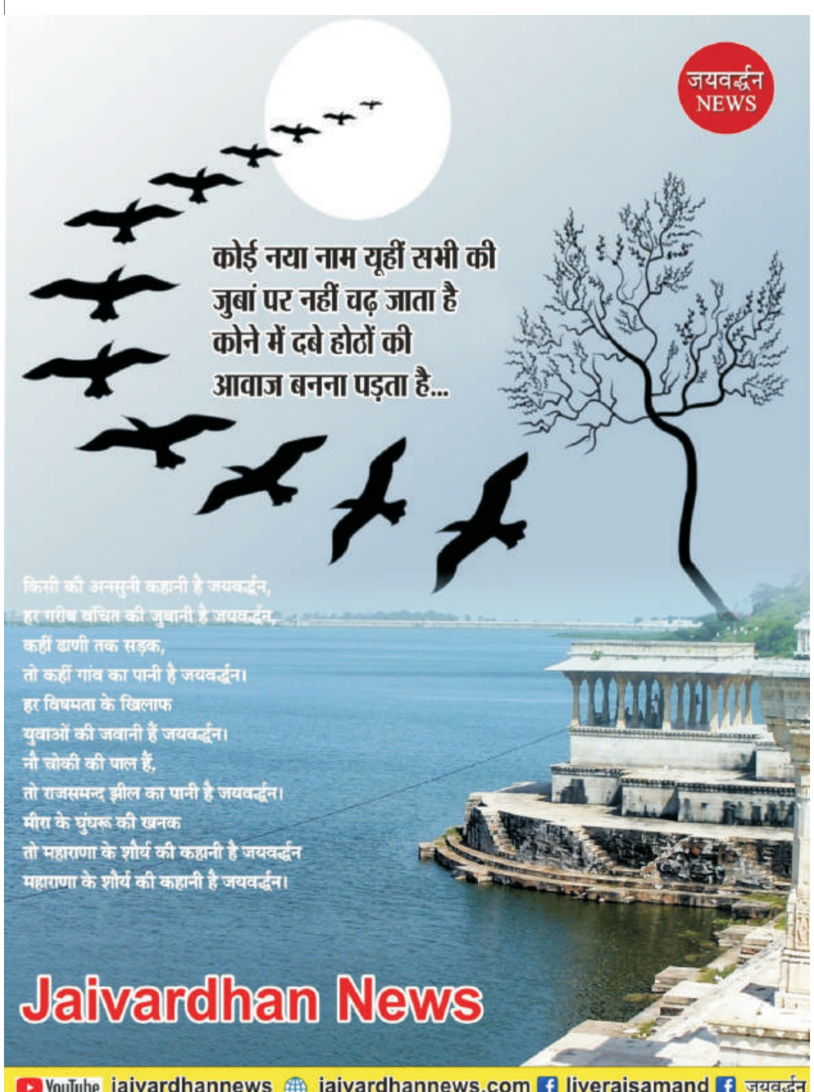

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

तोकालॉजी

जिस प्रकार अंग्रेजी भाषा में बायोलॉजी, सॉशोलॉजी या जियोलॉजी सहित कई शब्द है, जो अलग अलग शास्त्र के नाम है। इसी तरह आजकल हिन्दी में फेंकालॉजी और तोकालॉजी के नए नाम जुड़ गए हैं, जो काफी इस्तेमाल किए जाते हैं। ये किसी शास्त्र के नाम नहीं है, बल्कि लोगों की व्यवहारिक शैली के द्योतक है। अमूमन फेंकालॉजी एवं तोकालॉजी दोनों साथ ही चलते हैं। फेंकालॉजी में वरिष्ठ नेता ज्यादा पारंगत होते हैं। वहीं अनुगामी नेता तोकालॉजी में विशेष योग्यता रखते हैं। फेंकालॉजी नेताओं का सबसे बड़ा हथियार है, जिसकी बदौलत वे अपने भाषण से बड़ी संख्या में तालियां बटोर सकते हैं।

फेंकालॉजी में जो जितना प्रवीण होता है। राजनीति के मैदान में वह उतना ही अधिक सफल सिद्ध होता है। फेंकालॉजी पर विस्तृत चर्चा और कभी करेंगे, आज हम आपको तोकालॉजी के बारे में बताएंगे।

तोकालॉजी प्रत्येक छोटे दफ्तर से लगाकर विधानसभा और संसद तक पाई जाती है। सामान्यतया किसी भी क्षेत्र में वरिष्ठ अधिकारी या मंत्री को प्रसन्न कर इच्छा अनुकूल कार्य निकालने के लिए तोकालॉजी का इस्तेमाल किया जाता है। कहते हैं भगवान भी भक्तों की स्तुति के अधीन होते हैं। अर्थात् भगवान को भी स्तुति सुनकर भक्त को इच्छित परिलाभ देना पड़ता है। उसी तरह अधिकारी भी इन स्तुति गायकों के अधीन होते हैं। कहीं कामचोर चपरासी या घुसखोर बाबू अपने वरिष्ठ अधिकारी की तोकालॉजी करता हुआ दिखाई देता हैं, तो कहीं कोई विधायक बड़े मंत्री से अपने इच्छित कार्य के लिए तोकालॉजी में संलिप्त दिखाई देते है।

कभी कोई नेता किसी विभाग का मनोनीत अध्यक्ष या सदस्य बनने के लिए तोकालॉजी करता हैं। तोकालॉजी को मक्खन लगाना या चाटुकारिता भी कहा जाता है। कभी कभी आमजन को भी किसी ऑफिस में अपना काम निकलवाने के लिए तोकालॉजी करनी पड़ती है। तोकालॉजी रिश्वत से पहले की स्टेज है। जो काम तोकालॉजी के बाद भी नहीं हो पाता है, तो फिर उसे रिश्वत के ब्रह्मास्त्र से सिद्ध किया जाता हैं।

ज्यादातर विभागों के ऑफिस में मलाईदार कुर्सी या आरामदायक कुर्सी पर तोकालॉजी एक्सपर्ट ही आसीन मिलते हैं। अब हम तोकालॉजी एक्सपर्ट व इसके तरीके पर प्रकाश डालते हैं। ये तोकालॉजी एक्सपर्ट ज्यादातर नाटे कद के व मरियल शरीर के होते हैं। मगर कहीं- कहीं मुफ्तखोरी की वजह से ये कुर्सी तोड़ मोटे भी पाए जाते हैं। ये हमेशा सफेदजक या हल्के रंग के इस्त्रीशुदा चकाचक कपड़े ही पहनते हैं। हल्की इत्र की महक भी इनके कपड़ो से आती है। ये चरित्र पर दाग लगने के प्रति सजग रहने के साथ ही कपड़ों पर दाग लगने से भी हमेशा बचते रहते हैं।

अपने बच्चे का बर्थडे भले ही न मनाए, मगर अपने अधिकारी के जन्मदिन को सेलिब्रेट करना ये कभी नहीं भूलते हैं। अपने हाई रिजूलेशन के कैमरे से सेल्फी कार्यक्रम के तुरन्त बाद फेसबुक व स्टेट्स पर चढ़ाना इनके लिए बड़ा जरुरी होता है। ऑफिस के जरूरी काम को छोड़कर अधिकारी की जी हुजूरी करना ही इनकी प्राथमिकता होती है, मगर कभी- कभी अति वरिष्ठ के आगमन पर एक जिम्मेदार कर्मचारी का अभिनय भी ये बेहतरीन करते हैं। पेन का इस्तेमाल ये बहुत कम करते हैं, मगर इनकी जेब में एक जिम्मेदार कर्मचारी की तरह दो- दो पेन सुशोभित होते हैं। इनकी आवाज गुड़ से भी अधिक मीठी होती है। वरिष्ठ अधिकारी की स्तुति अर्थात तोकालॉजी में हिन्दी के अतिशयोक्ति अलंकार का ये भरपूर प्रयोग करते हैं।

प्रत्येक ऑफिस में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाला कभी सम्मानित हो न हो, मगर इन तोकालॉजी एक्सपर्ट को सम्मानित होने से कोई नहीं रोक सकता है। तहसील या जिला स्तरीय समारोह में एक बार सम्मानित होने के बावजूद भी ये अपने आप को अपमानित ही महसूस करते हैं। इसलिए इनमें हमेशा सम्मानित होने की भूख बनी रहती है और तोकालॉजी के दम पर तीन से चार बार भी ये सम्मानित होते हैं। मगर यह तोकालॉजी करना इतना सरल भी नहीं है। इसके लिए इंसान से कुत्ता बनना पड़ता है।

अपने **बिजनेस**
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।

स्पेशल ऑफर

विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-

सम्पर्क

शक्ति एडवरटाइजिंग

C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी स्वर्गीय माणकलाल जी वशिष्ठ

प्रभु श्री द्वारकाधीश की पावन नगरी कांकरोली की पावन धरा ने विभिन्न क्षेत्रों में कई विलक्षण प्रतिभाओं को इस धरा पर जन्म देकर कांकरोली के नाम को गौरवान्वित किया है। आज हम एक ऐसे ही बहुआयामी व्यक्तित्व के बारे में आपको बताने जा रहे हैं, जिनमें कई प्रतिभाएं और गुण कूट- कूट कर भरे हुए थे, जिन्होंने अपने कौशल और बुद्धि बल से अपना ही नहीं, अपितु पूरे समाज को गौरवान्वित किया और आदर्श की ऐसी छाप छोड़कर गए कि जिनके पद चिन्हों पर चलकर आने वाली पीढ़ी दर पीढ़ी ने सफलता के कई सौपान स्थापित किए और अपने कुल की मान मर्यादा को अक्षुण्ण बनाए रखा।

कांकरोली के रेती मोहल्ला में श्री स्व. नंदलाल जी वशिष्ठ के घर माता स्व. श्रीमती देव का बाई की कोख से 10 अगस्त 1908 ईस्वी. एक ऐसे ही विलक्षण प्रतिभा के धनी बालक ने जन्म लिया, जिसका नाम उनके गुणों के अनुरूप ही माणकलाल वशिष्ठ रखा गया। बाल्यकाल से जब वे किशोरावस्था में आए तो उनकी प्रतिभाएं गांव के लोगों के सामने आने लगी, उनकी कुशाग्र बुद्धि और कार्य के प्रतिनिष्ठा ने उन्हें कई कार्यों में निपुण बना दिया। स्व. गोपाललाल जी सनाढ्य से जब मैंने उनके बारे में जानना चाहा, तो वह सहजी बहुत कुछ कह गए। अफजलजी उनके बारे में क्या कहूं और क्या- क्या कहूं। वे सचमुच कई प्रकार के कार्यों के ज्ञाता थे, वे लगन के पक्के और सच्चे कर्तव्यनिष्ठ थे। छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा सभी कार्य पूरी निष्ठा और लगन से किया करते थे। अपने घर पर चाहे दीवार की चुनाई करनी हो, तो वह स्वयं करनी हथोड़ा ले। किसी कुशल कारीगर की तरह दीवार चुन लिया करते थे। मकान की खिड़कियां बनाना हो, तो किसी कुशल बढ़ाई की तरह खिड़की दरवाजे भी बना देते बेकार, तो वह कभी बैठते ही नहीं घर में रखी। पुरानी किताबों पर जील्द भी वह ही लगा दिया करते। ज्योतिष शास्त्र के भी वह अच्छे जानकार थे। कई पुस्तकों के अध्ययन के बाद उन्हें ज्योतिष में भी महारत हासिल थी। पाक शास्त्र के भी वह अच्छे ज्ञाता थे। अच्छे से अच्छा पकवान बनाकर लोगों को खिलाना उनके स्वभाव में था। हिसाब किताब के मामले में भी वह होशियार थे, लेखा- जोखा लिखने में वह प्रवीण थे। संगीत का भी उन्हें पूरा पूरा ध्यान था, संगीत के भी वह बड़े शौकीन थे। वाद्य यंत्र बजाने में भी वह प्रवीण थे।

किशोरावस्था से जब वे जवानी में आए हैं, तो उनके बहुआयामी प्रतिभा के कारण तात्कालिक महाराज श्री ने आपको मंदिर में कई महत्वपूर्ण कार्यों की देखरेख हेतु अपने संरक्षण में ले लिया और आप प्रभु श्री द्वारकाधीश के मंदिर में अपनी सेवाएं देने लगे। समय अनुसार एक प्रतिष्ठित घराने की बेटी कमलाबाई से आपका विवाह संपन्न हुआ। आपके 3 पुत्र श्री भंवरलाल, श्री चंद्रशेखर व सबसे छोटे पुत्र विनोद सनाढ्य हुए। आपके चार पुत्रियां प्रतिभा, निर्मला, लोकेश्वरी और धनभाग हुई। इसी दौरान आपने द्वारकाधीश मंदिर में

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

कई पदों पर कार्य करते हुए अपनी निष्ठा और लगन से सबका मन मोह लिया। आपने मंदिर के अनेक विभागों में कार्य किया और महाराज श्री का विश्वास प्राप्त किया। कई वर्षों तक मंदिर में अपनी सेवा देने के बाद आप सुंदर टॉकीज सिनेमा के मैनेजर पद पर आसीन हुए और कार्य को बखूबी निभाते रहे। कांकरोली में उस समय मनोरंजन का एकमात्र साधन सुंदर टॉकीज ही था। हम भी बाल्यकाल में जब सिनेमा देखने जाते, तो मैनेजर के रूप में उन्हें नजदीक से देखने का अवसर मिला। उस समय सुंदर टॉकीज में प्रत्यय श्रेणी का टिकट मात्र सवा दो आने का हुआ करता था, जब पिक्चर दो- चार दिन चल जाती, तो एक टिकट में दो सवारी को देखने का अवसर मिलता था।

लगभग 65- 70 वर्ष पहले की घटना है। जवानी की हवा पिक्चर हम सभी मित्र देखने गए। उस समय सुंदर टॉकीज में एक ही मशीन हुआ करती थी, जिससे मध्यांतर तीन चार हुआ करते थे और परदे पर स्लाइड चला करती थी। कृपया शांति बनाए रखें, पाठ बदले जा रहे हैं, पर उस दिन कुछ ऐसा हुआ कि अंत में जाते जाते रेल चल रही है और पिक्चर खत्म हो गई। लोगों ने समझा कि शायद पिक्चर कट गई है। अतः लोग चिल्लाने लगे- डी एंड नहीं आया है, पूरी फिल्म दिखाओ। मैनेजर साहब माणकलाल जी दौड़े दौड़े आए और लोगों से समझाइश की, पर लोग तो डी एंड की मांग पर अड़े हुए थे। उन्होंने अपने हाथ से एक इशारा किया और शफी पेंटर द्वारा बनाई स्लाइड दी एंड को प्रोजेक्टर द्वारा पर्दे पर दिखाया और लोग खुशी खुशी हॉल से बाहर चले गए। मेरे बचपन की एक घटना ने मुझे माणकलालजी की सहृदयता को समझने का मौका मिला। हुआ यूं कि मैं और मेरा मौसेरा भाई श्री अनवर खां दोनों ही सिनेमा देखने इसलिए चले गए कि शायद आज एक टिकट में दो जने देख सकेंगे, पर जब वहां पहुंचे तो मालूम हुआ कि आज एक टिकट में दो नहीं, एक ही व्यक्ति सिनेमा देख सकता है। हमारे पास पैसे भी एक ही टिकट के थे। अतः हमने आगे कुछ- कुछ पिक्चर देखने का मन बना एक टिकट खरीद कर सबसे पहले मौसेरे भाई को सिनेमा हॉल में इस टॉकीज के साथ भेज दिया। आधे घंटे में तो वापस बाहर आ जाओगे। मैं उस पास से फिर उतनी ही देर अंदर सिनेमा देखने चला जाऊंगा। उस समय थर्ड क्लास पर गेटकीपर श्री किशन दा पहलवान थे। मैं उनसे कुछ दूरी बना वहां खड़ा हो गया। आधे घंटे बाद मौसेरा भाई बाहर आया और मैं अंदर चला गया और फिर कुछ देर बाद में बाहर निकला तो मौसेरा भाई अंदर चला गया। इतने में मैनेजर साहब श्री माणक लाल जी वहां आ गए। उन्होंने मुझे वहां खड़ा देख श्री किशन दा उस्ताद से पूछा यह लड़का कौन खड़ा है, श्री किशन दा ने हम दोनों भाइयों के अंदर बाहर आने जाने का सारा किस्सा सुना दिया। वह हंसे और मुझे पास बुला श्री किशन दा से बोले कि इन दोनों को पिक्चर देखने दो और मैं जट से हॉल में जा भाई के पास बैठ पिक्चर देखने लगा। इस वाक्य को लगभग 65- 70 वर्ष गुजर चुके हैं, पर माणकलाल जी की हमारी कथा सुनने के बाद आई मुस्कान और उनकी सहृदयता मुझे आज भी उनके प्रति नतमस्तक कर देती है।

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान

जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

मंदिर मार्ग में आपने एक भव्य माता के मंदिर का निर्माण कराया, जहां आज भी माता का दरबार सजता है। पूजा पाठ होता है और लोग दर्शनों का लाभ लेते हैं। उनकी मृत्यु के बाद से ही लगभग 25 वर्षों से उनकी छोटी बेटी धनभाग इस मंदिर की देखभाल और पूजा अर्चना में संलग्न है। ईश्वर की अनुकंपा और उनके सद्कार्यों का फल उनकी आने वाली पीढ़ियों को मिल रहा है। उनके आशीर्वाद से ही उनके एक पुत्र श्री चंद्रशेखर मार्बल के सफल व्यवसायी हैं। मुंबई तक उनका कार्य फैला हुआ है। उनके छोटे पुत्र श्री विनोद सनाढ्य को कांकरोली का हर बाशिंदा एक अच्छा तैराक और समाजसेवी के रूप में जानता है। तैराकी और साहित्य के भव्य आयोजन करने का शौक भी विनोदजी को खूब है।

दिनांक 21 अक्टूबर 1995 को आपने अपने जीवन की अंतिम सांस ली और भरे पूरे परिवार को छोड़ स्वर्ग सिधार गए ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व को मेरी हार्दिक हार्दिक श्रद्धांजलि

अफ़जल खां अफ़जल
वरिष्ठ साहित्यकार
सलूस रोड, जलचक्की के पास
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 98284-75288

सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी

www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
डिजिटल राजस्थान,समृद्ध राजस्थान
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

व्यंग्य

यही तो है घोर आश्चर्य

समाज जीवन और परिवेश में जितने अधिक आश्चर्य इन दिनों देखने को मिल रहे हैं, वे पहले कभी देखे- सुने नहीं गए। हमारे पुरखों का दुर्भाग्य ही रहा कि इससे पहले बहुरंगी विचित्रताओं का ऐसा संसार कभी नहीं रहा। इस मामले में सत, त्रेता और द्वापर युगीन लोग भी फीके पड़ गए हैं। मुफ्त की चाय- काफी और समोसा- कचोरी, पकौड़ी के लिए मुंह मारने, हराम का खान- पान करने मुर्गा तलाशने और मूर्ख गधों की अनुचरी करने वाले उपकृत भेड़छाप लोग राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय मुद्दों पर उपदेश झाड़ रहे हैं। अपना घर तो संभलता नहीं इनसे और दुनियाभर की पंचायती में रमे रहते हैं।

व्हाट्सअप, फेसबुक सहित तमाम प्रकार के सोशल मीडिया पर ऐसे लोगों की भरमार है। क्यों न इन सभी लोगों को समाज और दुनिया के लिए तरह- तरह का ज्ञान बांटने की उल्लेखनीय और उत्कृष्ट सेवाओं को देखते हुए सम्मान राशि या बेरोजगारी भत्ता दिया जाए, ताकि ये और अधिक समय अपने समाज, अंचल, देश और विश्व को ज्ञान एवं उपदेश देने में कर सकें। यह इनकी परम उदारता और कृपा ही है कि जो विषय इनके कभी रहे नहीं, जिनमें इनका ज्ञान- अनुभव और दक्षता तक नहीं रही, ऐसे- ऐसे चिन्तन- मनन लायक ज्ञान से हमें समृद्ध करते रहे हैं। इस मामले में इन्होंने विषय विशेषज्ञों और आधिकारिक विद्वानों- विदुषियों को भी पछाड़ रखा है। इसे कहते हैं पूर्वजन्मार्जित मौलिक या कि आयातित ज्ञान का कमाल।

अपने विश्राम और नींद के समय में भी कटौती कर रोजाना घंटों तक कितना अधिक समय, डाटा और परिश्रम खर्च करते हुए जाने कहां- कहां से हमारे लिए ये ज्ञान और उपदेश संग्रहित कर परोसते रहे हैं। इस दिशा में इन देवदूतों का कोई सानी नहीं है। निष्काम समाजसेवा और विश्व कल्याण के लिए जी रहे इन समर्पित लोगों के प्रति हमें सदैव आभारी रहना चाहिए। क्योंकि इनका अपना व्यक्तित्व, गुण, दक्षता और ज्ञान- अनुभव सब कुछ पूर्वजन्म का संचित है। इसमें वर्तमान का कोई योगदान नहीं है। ईश्वर ने इन्हें केवल हमारे ज्ञान में अभिवृद्धि करने के लिए ही धरा पर अवतरित किया है।

ये ही वे महान लोग हैं, जिनकी बधाइयां, शुभकामनाएं और प्रोत्साहन पाकर प्रतिभाएं सुनहरे भविष्य की ओर आगे बढ़ रही हैं। अन्यथा इन प्रतिभाओं का भविष्य ही अंधकारमय हो जाए। किसी भी प्रतिभा को प्रोत्साहन, सम्बल और सहयोग में इनकी धेले भर की कोई रुचि भले न हो, पर जब कोई प्रतिभा कुछ उपलब्धि हासिल कर लेती है, तब बधाइयों और शुभकामनाओं की बारिश ये इस तरह से करते रहते हैं, जैसे कि इन्हीं के निर्देशन, मार्गदर्शन, सान्निध्य और सहयोग से ये प्रतिभाएं लक्ष्य पाने में सफल रही हों।

किसी तरह का किंचित मात्र भी प्रत्यक्ष या परोक्ष योगदान के बिना भी इन्हीं प्रेरक और अनुकरणीय समाजसेवियों का सम्बल ही है कि इन प्रतिभाओं को प्रचार के साथ ही आगे बढ़ते रहने की असीम ताकत और अपार आत्मविश्वास प्राप्त होता रहा है। मानवीय संवेदनाओं से भरपूर ऐसे मेधावी, अनुभवी व्यक्तित्वों के कारण ही दिवंगत आत्माओं के मोक्ष पाने की राह अत्यन्त आसान हो जाती है और बिना किसी संचित पुण्य के इन दिवंगतों को इन पराक्रमी लोगों की बदौलत ही आसानी से स्वर्ग प्राप्ति हो जाती है।

यह इन लोगों की परम कृपा और उदारता की कही जानी चाहिए कि इनके द्वारा प्रदत्त श्रद्धांजलियों और संवेदनाओं की वजह से वे लोग भी मोक्ष प्राप्त कर रहे हैं, जिन्हें ये न जानते हैं, न कोई नाते- रिश्तेदार हैं और न कोई दूर- दूर तक का रिश्ता। यह इन प्रज्ञावान बुद्धिजीवियों की सरलता, सहजता और निरहंकारी स्वभाव का ही परिणाम है कि ये अपने स्तर से नीचे उतर कर भेड़चाल में शामिल होकर धड़ाधड़ शोक संवेदनाओं और श्रद्धांजलियों की बरसात करते रहे हैं। अन्यथा इस घोर कलियुग में जिंदा लोगों और नाते- रिश्तेदारों की भी कोई परवाह नहीं करता।

इनके साथ ही कुल परम्परा से सच्चे धार्मिक और नैष्ठिक उन भक्तों को भी नहीं भूलें, जिन्हें मंदिर जाने, नित्यकर्म, पूजा- पाठ, जप- अनुष्ठान और धार्मिक कार्यों को करने में कोई रुचि नहीं है। इन दिव्य कार्यों के लिए इनके पास कोई समय नहीं है। फिर भी दुनियाभर के मन्दिरों और भगवानों के फोटो भेज- भेज कर हम सभी नास्तिकों के मन में आस्था जगाने के अनथक प्रयासों में दिन- रात जुटे हुए हैं। धर्म और संस्कृति रक्षा में इनके इस अतुलनीय योगदान को सदियों तक नहीं भुलाया जा सकेगा।

इसके अलावा सेहत और ज्योतिष के अपरिमित ज्ञान की बदौलत हम सभी लोग आरोग्यवान भी हो रहे हैं और छोटे- मोटे ज्योतिषी भी। इनके द्वारा भेजे जाने वाले टोने- टोटकों का ही परिणाम है कि हमारी अपनीए घर- परिवार की समस्याएं मामूली खर्च में या बिना किसी खर्च के ऐसे खत्म हो रही हैं कि कुछ कहा नहीं जा सकता। जीवन के सारे अभाव इनकी वजह से दूर होकर सब तरह की सुख- समृद्धि और आनंद संचार का अनुभव हो रहा है। वेद, पुराण, धर्म शास्त्रों और ज्ञान- विज्ञान से कोसों दूर रहने वाले सभी लोगों और समाज के लिए ये ज्ञानीजन ईश्वर के वरदान से कम नहीं हैं।

विभिन्न क्षेत्रों में निष्णात ज्ञानी- अनुभवी बुजुर्ग एवं पेंशनधारी वृद्धजनों के प्रति भी हमें बहुत अधिक आभारी होना चाहिए जो कि अपने पेशे, कर्म और अपनी दक्षता से संबंधित विषयों और अनुभवों की बजाय अन्यान्य विषयों पर महत्वपूर्ण ज्ञानराशि से हमें लाभान्वित करते रहे हैं। यह उनके लोक कल्याणकारी बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचायक होने के साथ ही समुदाय के लिए गौरव व गरिमा का विषय है।

इन सभी त्वरित प्रतिक्रियावादी हस्तियों की दीर्घायु और यशस्वी जीवन के लिए भगवान से प्रार्थना करें, जिनके कारण हमें दुनियाभर का चाहा- अनचाहा ज्ञान प्राप्त हो रहा है। हम रहें न रहें, अपनी संततियों को भी कहकर जाएं कि इन गौरवशाली विद्वान ज्ञानियों और उपदेशकों को यथोचित आदर- सम्मान से नवाजें। क्योंकि समाज की इन धरोहरों के कारण ही हमें अपने समाज और अंचल पर गर्व है।

समाज और क्षेत्र की यह जिम्मेदारी है कि ऐसे ज्ञानी उपदेशकों की मूर्तियां लगवाई जाएं। इन पर पीएचडी करने के अवसर सुलभ हों, इनके नाम पर अलंकरण, सम्मान और पुरस्कार स्थापित किए जाएं। हर कार्यक्रम में इन्हें अतिथियों के रूप में आमंत्रित कर वीआईपी ट्रीटमेंट दिया जाए। ऐसा करके ही हम कृतज्ञ समाजजन, क्षेत्रवासी, देशवासी और दुनिया के लोग इनकी श्लाघनीय और युगीन सेवाओं से उऋण हो सकते हैं। यह हमारा सम सामयिक धर्म, फर्ज और नैतिक जिम्मेदारी है।

दीपक आचार्य
व्यंग्यकार एवं उप निदेशक
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग जैसलमेर

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान
जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

समसामयिक प्रश्नोत्तरी

परितोष पालीवाल
82338 82818

1. राजस्थान के विद्यालयों में ऑनलाइन शिक्षा के लिए किस कार्यक्रम की शुरुआत जुलाई माह में की गई थी?
2. अफगानिस्तान के अधिकांश अपराधियों पर किस आतंकवादी संगठन ने कब्जा कर लिया है।
3. कोरोना के नए वेरिएंट का क्या नाम है ?
4. 2021 में आजादी के जश्न को किस महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है ?
5. राजस्थान के कितने खिलाड़ियों ने ओलम्पिक खेलों में देश का प्रतिनिधित्व किया ?
6. राजसमंद जिले की किस एथलीट ने ओलंपिक खेलों की पैदल चाल प्रतियोगिता में देश का प्रतिनिधित्व किया ?
7. 2020 टोक्यो ओलंपिक में भारत को पहला पदक दिलाने वाले खिलाड़ी का नाम बताइए।
8. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार का नाम बदलकर क्या रखने की घोषणा की है ?
9. ऑस्ट्रेलिया वह गेंदबाज जो अपने डेब्यू मैच में हैट्रिक लेने वाला दुनिया का पहला गेंदबाज बन गया है ?
10. हाल ही में भारत के लिए जिस महिला मुक्केबाज ने अपने पहले ही ओलम्पिक में कांस्य पदक जीत लिया है ?

उत्तरमाला

(1) SMILE 3.0 (2) तालिबान
(3) डेल्टा प्लस
(4) अमृत महोत्सव के रूप में
(5) आठ (6) भावना जाट
(7) मीराबाई चानू
(8) मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार
(9) नाथन एलिस (10) लवलीना बोरगोहेन

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..

अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी मूलभुत समस्या, नवाचार, आयोजन, मुद्दे, लेख, चुटकले, कहानी, कविता हमें भेजे

E-Mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

राखी भेजवा देना

बहन राखी भेजवा देना,
अबकी ना मैं आ पाऊंगा।
काम बहुत हैं ऑफिस में,
मैं छुट्टी ना ले पाऊंगा।।

कलाई सुनी ना रहें मेरी,
ये बहना याद रख लेना।
अपने भाई के पते पर,
राखी तुम भेजवा देना।।

करोना काल संकट भारी,
मिलने तुम ना आ जाना।
गर पूछे भांजी भांजा तो,
मामा का प्यार कह देना।।

राखी पर ना मेरे आने से,
तुम मुझसे ना रूठ जाना।
हाथ जोड़ कर रहा निवेदन,
राखी जरूर भेजवा देना।

भेज रहा राखी उपहार संग,
चिट्ठी में प्यार के दो बोल।
माफ करना अपने भाई को,
मना न सका पर्व अनमोल।।

राह देख ना अबकी मेरी,
राखी थाली सजा ना लेना।
क्वरंटाइन का बड़ा झंझट,
भेज राखी फर्ज निभा लेना।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर,
जौनपुर (उत्तरप्रदेश)
मो. 8367782654

दुमदार दोहे

उसने बांटा हिन्दु- मुस्लिम,
तुमने बांटा अंगड़ा- पिछड़ा।
बारी- बारी तुम राज करोगे,
जो कुछ बिगड़ा हमारा बिगड़ा।।
तुम दोनों का क्या बिगड़ा ?

माना तुम हो सच्चा सोना,
उसकी बना दो कटारी।
मार हमारे पेट में इसको,
लड़ना इसने मारी उसने मारी।।
देखी दोनों की अय्यारी

अच्छे दिन और क्या होंगे,
टके सेर भाजी टके सेर लेंगे।
झूमलो की दुनिया में जीकर,
सपनो में अंगड़ाई लेंगे।।
सोचो क्या वोट तुम्हें ही दंगे

ऐसे विकास से अच्छा था
मिलजुलकर आपस में रहना।
भूल गए सब नाते रिश्ते,
अथाह दु:खों को पड़ा है सहना।।
किससे कहे और क्या है कहना

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, सलूस रोड
कांकरोली, राजसमंद

कद भणवां ने जाऊं

टिपणो देखो जोशीजी, मूं कद भणवा ने जाऊं
आछो मौहरत काढ़ो थें, जठ हाकम बण जाऊं
दनिया रा ताणा सुन- सुन ने म्हारो जीव घणो घबरावे
कोई गैली, कोई बैण्डी, कोई मूरख म्हने वतावे
अनपढ़ ठोटी को जमानो कोनी, झट बेणजी बण जाऊं
मूं दबती दबती बाजारां में मनखां सामे चालू
खोटा रीति रिवाजां ने, मूं कतरा दिन तक पाळू
म्हारा मन की इच्छाओं ने, मूं मन ही मन में दबाऊं
घर में जतरो हक भाई रो, वो मूं भी तो पाऊं
भाई म्हारो मास्टरजी तो मूं बेणजी बन जाऊं
(पण्डितजी टिपणो देखीन वताई रिया है)
छोरी जनम पतरी में थारे घणा आच्छा ग्रह पड्या
थोड़ो सो थूं ध्यान राखे तो काम होवे सब बढ़िया
काची उमर में परणे मती थूं हाकम में नी वण पावेगा
सूख- सूख ने हण्टी वेगा, वो रूबाब कठासुं लावेगा
थारे तूंताड़्या छोरा- छोरी जन्मेगा, कदीनी वे पनपेगा
और थारी भी कांई गारंटी, थूं मरवां सूं बच जावेगा
सावचेत रीजे थूं छोरी, थनें घणी अच्छी बात बताऊं
हर मोटर ऊपर लिख्यो थको है, या मोटर वठे जावेगा
थूं पूछ पूछ करती रेवेगा, ओ बापू या मोटर कठे जावेगा
सरकार वाळा थारे गांव में, लाखों रुपीया लगावेगा
सड़क, बिजली आवेगा, ठाम- ठाम हैंडपम्प खोदावेगा
थूं छोरी भण जावेगा तो थारो घणों काम बण जावेगा
वरना थारो अंगोठो लगवाई ने
थारां रुपीया सब दूजा खा जावेगा
पूरी भणाई करजे छोरी, थोड़ी भण ने मत छोड़जे
सपनां थांरा अधूरा रेवेगा, करम हाथां सूं मत फोड़जे
मोटा मेहकमा में थूं हाकम बण सकें,
मूं थने या भी वात वताऊं
टिपणों देखों जोशीजी, मूं कद भणवां ने जाऊं
आछो मौहरत काढ़ो थें, जठ हाकम वण जाऊं।

दाड़मचंद दाड़म
वरिष्ठ कवि
सेक्टर 4, उदयपुर
मो. 94603-37076

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

कहानी

सफर से हमसफर

ये सीट मेरी है, विजयवाड़ा स्टेशन पर इतना सुनते अमित ने पीछे मुड़कर देखा, तो एक हमउम्र की लड़की एक हाथ में स्मार्ट फोन और दूसरे हाथ में बैग पकड़े खड़ी थी। जी मेरा सीट ऊपर वाला है, ये शायद आपका है अमित ने कहा। ठीक है, अब आप अपना सामान हटा लीजिए और बैठने दीजिए, मुझे मेरी सीट पर। इतना सुनते अपना समान हटाते हुए अमित कहने लगा, मेरा नाम अमित है और मुझे बनारस तक जाना है। आप कहां तक जाएंगी। उधर से कोई प्रतिक्रिया आते ना देख अमित चुप हो गया। थोड़ी देर बाद अपना बैग सीट के नीचे रखकर मोबाइल को चार्ज में लगाते हुई वह लड़की बोली- मेरा नाम सुमन है और मैं कॉलेज की छुट्टियों में मम्मी के यहां पटना जा रही हूं। अच्छा तो आप बिहार से है और यहां विजयवाड़ा में पढ़ाई करती है?

अमित को इतने पर रोकते हुए सुमन ने कहा- मैं बिहार से हूं, लेकिन केरला में एमटेक की पढ़ाई करती हूं और विजयवाड़ा में अपने दोस्त के शादी में आई थी। अब छुट्टियों में घर जा रही हूं। आप क्या करते हो अमित, सुमन ने पूछा । आपकी तरह मैं भी इंजीनियर हूं और मां की तबियत सही नहीं है। इसलिए गांव जा रहा हूं, मां से मिलने। क्या हुआ आपकी मां को, सुमन के पूछने पर अमित ने बताया कि मां की तबियत अक्सर खराब रहती है और इस समय थोड़ा ज्यादा खराब हो गई है। इसलिए गांव जा रहा हूं। इतने में टिकट- टिकट कहते हुए टीटी की आवाज सुनाई पड़ती है। अमित ने अपना टिकट टीटी को दिखाकर सुमन से कहा कि मेरी सीट ऊपर वाली है और थोड़ी देर में डिनर करके मैं अपनी सीट पर चला जाऊंगा। कोई बात नहीं मैं भी डिनर के बाद सोऊंगी, तब तक बैठ सकते हैं आप। थोड़ी देर बाद अपनी टिफिन खोलते हुए अमित ने कहा आप भी लीजिए। नहीं आप खाइए, मैं टिफिन साथ लाई हूं। सुमन से इतना सुनते अमित ने कहा चलिए फिर साथ में डिनर करते हैं। डिनर के बाद सुमन ने अमित से कहा- आपका खाना तो काफी अच्छा था, आपने खुद बनाया था? नहीं- नहीं ऑफिस से पैक कराया था मैंने। अमित ने जवाब दिया। चलो अच्छा है, आप हिंदी बोल लेते हो। शायद पूरे बोगी में हम दो ही हिंदी भाषी हैं। आपकी सीट पास में नहीं होती तो मैं बोर हो जाती। इतना सुनते अमित ने कहा अरे ऐसे कैसे? आप बोर न हो, तभी तो भगवान ने मुझे यहां भेजा हैं, इतने पर दोनों जोर से हंस पड़े।

पूरें सफर में दोनों एक दूसरे के पसंद- नापसंद, परिवार, पढ़ाई इत्यादि को लेकर ऐसे बात कर रहे थे। जैसे उनकी ये पहली मुलाकात नहीं, बल्कि बरसों पुरानी जान पहचान हो। अगले सुबह भोर में अमित का स्टेशन आ गया। उसने सुमन की तरफ देखा, वह सो रहीं थी। उसकी नींद खराब न हो इसलिए अमित ने उसे जगाना जरूरी नहीं समझा और सीट के नीचे से अपना बैग निकालने लगा। इसी बीच सुमन घबरा कर उठी और नींद में कौन हो, कौन हो कहने लगी। अरे सुमन, मैं अमित मेरा स्टेशन आ गया और मैं अपना बैग निकाल रहा था। क्या बनारस आ गया, अमित? मुझसे बिना मिले जा रहें थे तुम, जगाना भी जरूरी नहीं समझा ? अरे सुमन! मैंने सोचा तुम्हें क्यों परेशान करूं। इतना सुनते ही सुमन बोल पड़ी बिना मिले जाते तो मैं क्या परेशान नहीं होती ? सुमन के इन शब्दों से अमित को वही अहसास हुआ, जो उसके दिल में हो रहा था। फिर उसने सुमन से कहा- सुमन, चाहता तो मैं भी नहीं था कि बनारस स्टेशन इतनी जल्दी आए, पर अब मेरी मंजिल आ गई और हमारा सफर यहीं खत्म हुआ। कैसा सफर अमित, हमारी तो ट्रेन की सफर खत्म हुई है। दोस्ती की नहीं सुमन ने जवाब दिया। इतने में ट्रेन ने बनारस छोड़ने का हॉर्न बजा दिया और अमित सुमन को बाय कहते हुए अपना बैग निकालकर चल पड़ा। सुमन भी दरवाजे तक अमित को बाय- बाय कहते हुए छोड़ने आई।

अगले कुछ महीनों तक दोनों एक दूसरे से बात करते रहें और कुछ महीनों बाद सुमन ने भी अपनी पढ़ाई पूरी कर लिया और अब नौकरी करने लगी। फिर एक दिन दोनों ने निश्चय किया, क्यों न इस दोस्ती के सफर को कभी न खत्म होने वाली सफर बना लें। फिर दोनों अपने- अपने घर में एक दूसरे के बारे में बताकर शादी करने की बात कहीं। घर वालों ने भी उनकी खुशी के लिए उनको एक दूसरे का हमसफर बना दिया।

जीवन के कई साल साथ बिताने पर जब अमित और सुमन अपने खुशी भरे परिवार और बच्चों को देखते हैं, तो उनकी जुबां से निकल पड़ता है कि ये बच्चें, हमारे जीवन में ट्रेन के उस डिब्बे की तरह है, जिसके सफर ने हमें हमसफर बना दिया।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, जौनपुर (उत्तरप्रदेश)
मो. 8367782654
व्हाट्सएप : 8792257267

सवा माह औरत बन औरत से दूर

जन जातियों में अभिनय किसी अनुष्ठान से कम नहीं। बहुत हद तक हमारे अनुष्ठानों के पीछे के एकनिष्ठ संकल्प और अलगाव के आचार का मूल जन विश्वास से ग्रहण कर श्लोकबद्ध किया गया लगता है। आचार्य भरत और आदिभरत से लेकर धनंजय, भोजदेव, शारंगदेव, सोमेश्वर आदि ने किसी नाटक के पात्रों के आवधिक आचरण का उल्लेख नहीं किया, लेकिन जन जातियों में ये आचरण सदियों से रहे हैं।

भील जैसी सबसे पुरानी और अपनी सुदीर्घ प्रथाओं की पीठिका से सम्मानित जाति जिस गवरी नृत्य को करती है, उसका अपना अनुष्ठान पक्ष है। भादो के लगते ही वे 40 नाटिकाओं के अभिनय के लिए घर ही नहीं, गांव से भी निकल पड़ते हैं। जो कोई कलाकार हैं, वे विसर्जन तक गृहस्थ होकर घर नहीं आते। गांव- गांव गवरी होती है। गवरी में जितने नारी पात्र होते हैं, वे आदमी ही निभाते हैं। दो या चारों राइयां, खेतू, अंबाव, कालका, वराजू, कंजरी, गुजरी, आदि वे पूरे सवा महीने तक परिवार, पत्नी, पुत्र, पुत्री के समस्त दायित्व से दूर होकर अभिनय को धर्म और कर्म समझ कर करते हैं।

ताज्जुब होता है कि गवरी में कभी पात्र बदलते नहीं। जिस घर के हिस्से में जो पात्र बनाना तय है, उसका मुखिया उस किरदार को करेगा ही। युवा होने से लेकर बुढ़ापे तक अथवा जब तक बेटा वह पात्र अभिनीत न करने लगे। देव, दानव, मानव, पशु ही नहीं, खेचर और

जलचर जैसे छह प्रकार के पात्र इस नृत्य शैली को शास्त्र की सीमा के पास प्रतिष्ठित करते हैं। नाट्य शास्त्र चार प्रकार के पात्र ही बताता है।

गवरी के नारी पात्र प्रेयसी प्रसंग वाले नहीं, वे अतिकाय और अतिशय हैं। आपत्तिकाल में जब भी किसी आदमी ने उनको पुकारा, वे बल और बुद्धि पूर्वक उसका साथ देती हैं। धरती ही क्या, आकाश और पताल में भी वे देवी इसलिए हैं कि साथ देती हैं। यथा समय वे आयुध उठाकर अपने अतिंद्रीय पराक्रम को रचती और दिखाती भी हैं।

कितना कठोर संकल्प होता है

नारी वेश यदि धारण कर लिया तो वह अपनी पत्नी, परिवार से दूर रहेगा। नशा नहीं करेगा। बहन, बेटी के घर, गुवाड़ी, गांव में नाचकर उनके आयुष्य, धन, धान्य, संतान सुख की कामना करते हैं। पशुधन समृद्ध हो, समय पर बारिश हो और बहनों की राखी फली फूली रहे। है न अनूठा पात्र व्रत। (भारतीय लोक माध्यम)

चित्र : संदीप मेघवाल

श्रीकृष्ण 'जुगनू'
वरिष्ठ साहित्यकार
उदयपुर

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
करें कॉल : 94142-39648

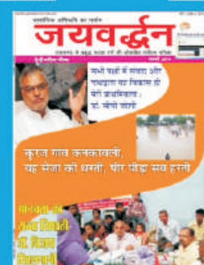

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम-श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	40	200 रुपए
3 वर्ष	36	720	220	500 रुपए

जयवर्द्धन 3 वर्ष की बुकिंग से 220 रुपए की महाबचत

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,

जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

नियम और शर्ते :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

राजस्थानी केणावतां

स्याणो कागलो गन्दगी पै बैठे

अर्थात् – समाज में कुछ जानकार व्यक्ति भी कभी कभी गलतियां कर बैठते हैं।

ज्यादा जाण वठे ज्यादा हांण

अर्थात् – जो मनुष्य अधिक बुद्धि लगाता है। फिर भी उसके कर्मों के अनुसार ही लाभ या हानि उसे प्राप्त होगी।

घणा तेरू री रांड वे

अर्थात् – अधिक गहराई में बिना सोचे- समझे तैरने वाले कभी कभ्री डूब जाते हैं और उनकी पत्नी विधवा हो जाती है।

भाग फूटणो व्हे तो भाटा रो जोग मले

अर्थात् – हमें नुकसान होना होता है, तो ऐसे कार्य हम कर बैठते हैं, जिनसे परिणाम विपरीत मिलता है।

सौ दना में सांधों मल्यो अर घर घणी आंधो मल्यो

अर्थात् – कई दिनों तक कोशिश की। फिर भी सफलता अधूरी ही प्राप्त हुई।

अठे भी अंधाधुंध मंगल गवईयां

अंजार नगर में सेठ कचरूमल रेवता हा। वणा रै मोटको कोरो जणी री आंखां में फूलो वेवा सूं कई साल तक हगाई नी वी। सेठ रै कोड़े पीया कोड़ी री कांई कमी नी ही। नौकर- चाकर, दुकान पै कई कामदार काम करता, पण छोरा री आंखां री खोट सूं चालीस वर रौ वेवा पै बी हगपण नी वे सक्यो।

एक दन पास रा गाम रो भाट भेरो सेठ री दुकान माथे गाबा लेवण आयो तो सेठ रा गुमास्ता वणी भाट ने कियो- भाटजी! म्हांके सेठजी रा बड़ा बापू कंवारा है, वणा नै पनावणा है, कठेई छोरी व्हे तो कबाड़ो।

भाट देख्यो, ओ मौको ठीक मल्यो है के आपणे सेठ लक्ष्मीलाल जी रै घरां बाईसा 35 बरस रा बैठा थकां है, सो वात वरी करां। भाट बोल्यो- सेठजी सूं मिलाओ अर म्हूं, कंवर सा परवाणे वींदणी वताऊं। गुमास्ता जायर सेठ सूं बात करी अर हगपण तै वे गियो।

दस- पन्दरे दन पछे सेठजी वरात लेर पड़ोस रा गाम चाल्या अर गाम माथे पूगता ई वरात्यां रौ भाट दूहा देणे चालू कीदो-

'बनो तो म्हारो फूल फुलईया'

आगे छोरी रौ भाट भी बोलण लागो-

'अठे भी अंधा- धुंध मंगल गवैइयां'

ईं दूहा रौ अरथ दोई भाट समझ ग्या। पण छोरी रौ बाप अर छोरा रौ बाप ब्याई-सगां री आवभागत में राजी वेई रीया हा। पंडत फेरा दीदा अर वरात घरां पूगी तो लाड़ी ने हूंजे नी जीं कारण लारां आई डावड़ी हाथ पकड़र चालरी।

थोड़ा दना पछे ठा पड़ी के वींदणी आंधी है, पण सेठ आपणों छोरा रै आंख रौ फूलों वेवा सूं कई नी बोल सक्यो। मन मसोकी नै रेई ग्यो।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार
जाट गली, कांकरोली
मो. 99286-25757

प्रमोद की कलम से उदय हुआ 'भोर का सूरज'

भोर का सूरज प्रमोद सनाढ्य प्रमोद का पहला काव्य संग्रह है, जिसमें कवि ने अपने मन की गहराइयों से अपने रिश्ते की डोर का ताना-बाना इस तरह बूना है कि दिल को छू लेता है। अपने पराए रिश्ते को जिस नाजुक तरीके से कविताओं में लिखा गया है कि रिश्ते की अहमियत सहज ही इर्द गिर्द घूमने लगती है और अपनों का दर्द दर्द और सुख सुख महसूस होता है। भोर का सूरज भिन्न- भिन्न कविता रूपी फूलों का एक ऐसा गुलदस्ता है, जिसकी महक लंबे समय तक महसूस की जाती है और बार बार उन कविताओं को पढ़ने का मन करता है। जमीन से जुड़ा यह कवि मां, पिता, भाई और बहनों के रिश्ते को इस नाजुक अंदाज से काव्य रस में गोलता है कि कविता पढ़ने को बार- बार मन होने लगता है। अपनी माटी और अपने सामाजिक रिश्तों को कविताओं में अपने संस्कार के अनुरूप डालकर प्रमोद सनाढ्य 'प्रमोद' ने अपनी कविताओं को नई ऊंचाइयां प्रदान की है। आगे जाकर भोर का यह सूरज निश्चित रूप से कई और कविता संग्रह को चमक देगा, ऐसा ही विश्वास इस संग्रह की कविताओं को पढ़ने वालों को दिलाती है। इस कविता संग्रह को अपने हमजोली गांव वह गलियों तक नहीं भूला है। कभी उसने अपनी कविताओं में इनका भली-भांति उपयोग किया है। इस कविता संग्रह को कवि ने अपने पिता श्री को समर्पित किया है-

एक भावपूर्ण काव्य विधा में
पहला अर्पण उन चरणों में
जो श्रीचरणों में बैठे है।
आगाज दिलाया जीवन का,
पिता जिन्हें हम कहते हैं।

इसी तरह मां पर लिखी कविता कि यह दो पंक्तियां मन और मस्तिष्क को जगजोर देती है।

छोटे थे तो लड़ते थे मां मेरी है, मां मेरी है
आज बड़े हैं तो लड़ते है मां तेरी हैं, मां तेरी है

बड़े होकर इस तरह मां को ठुकराने वालों को नसीहत देती बहुत प्यारी पंक्तियां प्रमोद ने लिखी है-

वो खुशनसीब हैं जो मां के करीब है
वरना, बिना मां के तो ममता भी गरीब है।
श्वेत कपोत से पंख पसारे, धवल धुंध नभ छाई है
तुम घोर निशा की छोड़ो, नई भोर उजासी आई है

आज फिर अखबार में ये खबर आई है।
आज फिर शर्म से इन्सानियत शरमाई है ।।
करके घिनौनी हरकत से, हर उम्मीद मिटाई है।
फिर किसी बेटे ने अपनी मां की कोख लजाई है।

आज सवेरे सवेरे चेहरे पर हंसी मन में उदासी छा गई।
आंगन में देख चहकती चिड़ियां बेटी जो याद आ गई।
एक शब्द सुनहरा हिन्दी का, एक उर्दू का अल्फाज लिखा।
मैंने अपनी भारत मां का ए सुन्दर सा इतिहास लिखा।।
बैठ के मन्दिर की पेढ़ी पर, मस्जिद का अहसास लिखा।
एक ज़ियारत यूं भी कर लूं, उसकी इबादत यूँ भी कर लूं।
जो घूम के आए रब की गलियां, उन कदमों को लब से छू लूं।

इश्क के इज़हार की, यूं रीत लिख रहा हूं मैं।
सामने बैठी गज़ल, गीत लिख रहा हूं मैं।।
शतरंज की बिसात पर, खेलता है, खेल प्रमोद ।
हारकर ये दिल की बाजी, जीत लिख रहा हूं मैं।।

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, सलूस रोड
कांकरोली, राजसमंद

पुलिस थानों में मानवाधिकारों को सबसे अधिक खतरा है!

देश की सबसे बड़ी अदालत के मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि 'पुलिस थानों में मानवाधिकारों को सबसे अधिक खतरा है...।'

महोदय,

कह तो देते हैं, समझते क्यों नहीं हैं। अभी दिल्ली की पुलिस की बागडोर ऐसे अधिकारी को सौंपी गई, जिन पर सीबीआई में रहते गंभीर आरोप ही नहीं थे, बल्कि उनको सीबीआई में लाने से पहले भी उनकी छवि सत्ताधारी नेताओं के इशारों पर जुर्म को बढ़ावा देने की रही। शायद उनकी काबिलियत यही समझी जाती है।

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीश जानते हैं, हर राज्य में मानवाधिकार आयोग ऐसे ही सेवानिवृत न्यायाधीशों को उपहार की तरह मिलता है। हमने देखा है, हरियाणा मानव अधिकार आयोग के लोग शहर में आते हैं, शानदार बैंक्वेट हॉल में पुलिस अफसरों के साथ मंच से उनकी महिमा का गुणगान करते हैं, बदले में अधिकारी उनकी तारीफ करते हैं। अख़बार वाले खामोश रहते हैं, सब देखकर भी। मानवाधिकार वाले शिकायत करने वालों से मिलने को तैयार नहीं होते, फिर उनका मकसद क्या है।

जिस देश में खुद सबसे बड़ी अदालत के बड़े पद पर बैठे व्यक्ति पर आरोप लगते हैं, उनकी जांच उनके अधीन करवा बच ही नहीं जाते, बल्कि मुख्य न्यायधीश बनकर विवादित मुकदमों पर शासन करने वाले लोगों के पक्ष में निर्णय देकर पद से मुक्त होते ही राज्य सभा सांसद बन जाते हैं। उस देश में राज़ क्या है, सब खुला खेल चल रहा है। नगरपरिषद, पुलिस, सरकारी विभाग अपराध करने वालों को सहयोग करते हैं। इसलिए अधिकांश अपराध उनकी सहमति से होते हैं। पुलिस और नगरपरिषद के लोग नियम तोड़ने वालों को हाथ जोड़ सलाम करते दिखाई देते हैं।

आम नागरिक के साथ ये सभी अवसर मिलते ही असभ्य व्यवहार और डराने धमकाने की बात करते हैं। यहां जिनको कानून की रक्षा करनी चाहिए। कायदे- कानून से खिलवाड़ कर अपनी सहूलियत से डंडा चलाते हैं।

न्यायधीश जिला अधिकारी, विधायक, सांसद, स्थानीय कर्मचारी से बड़े राज्य सरकार, देश की सरकार के शासक कहते बड़ी बड़ी बातें हैं, वास्तव में करते उल्टा ही हैं। ज़मीर, कर्तव्य, ईमानदारी संविधान की पद की शपथ कोई भी महत्व इन लोगों के लिए ऐसी संस्थाओं, संगठनों का नहीं है।

ये समाज की असलियत की बात लिखी है। किसी की कोई निजी शिकायत दर्ज नहीं की गई है। हमेशा की तरह मुझसे ही आकर तफ्तीश करने की अनुचित बात मत करें। आपके घर दफ्तर की गंदगी को कालीन में ढकने छिपाने की जगह सफाई करनी चाहिए। आत्मचिंतन करना उचित होगा।

डॉ. लोक सेतिया
फतेहाबाद, हरियाणा
मो. 94167-92330

स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों का भारत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नए भारत के अपने दृष्टिकोण की व्याख्या करते हुए लोगों से 2022, भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के लिए एक लक्ष्य निर्धारित करने और इसे पूरा करने की दिशा में काम करने का आग्रह किया। क्योंकि स्वतंत्रता सेनानियों के सपने हैं, जो अभी भी अधूरे हैं और उन्हें पूरा करने की दिशा में काम करना हर किसी का कर्तव्य है। हमारे देश के कई महापुरुषों ने एक शक्तिशाली, सुरक्षित, समृद्ध और समावेशी राष्ट्र का सपना देखा है। उस सपने को पूरा करने के लिए हमें एक साथ दृढ़ संकल्प और अधिक तीव्रता और गति के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

यह समय की मांग है और भारत को आज के वैश्विक परिवेश में इस अवसर को नहीं गंवाना चाहिए। यह सच है कि जब एक कल्याणकारी राज्य गरीबी से जूझ रहा होता है, तो लोगों को विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से जीवनयापन प्रदान किया जाना चाहिए, लेकिन साथ ही साथ राष्ट्र को भी प्रगति करनी चाहिए। गरीब लोगों का उत्थान और सशक्तिकरण होना चाहिए, लेकिन साथ ही आधुनिक भारत को भी आगे बढ़ना चाहिए। इसलिए विकास की धारा एक ऐसे पथ पर प्रवाहित होनी चाहिए, जहां एक ओर जहां आम आदमी का कल्याण हो, वहीं दूसरी ओर आधुनिक बुनियादी ढांचे के विकास के लिए योजनाएं लागू की जा रही हों।

14 अगस्त 1947 की आधी रात को भारत आजाद हुआ। जवाहरलाल नेहरू आजाद भारत के पहले प्रधानमंत्री बने और 1964 तक अपना कार्यकाल जारी रखा। देश की भावनाओं को आवाज देते हुए प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा- बहुत साल पहले हमने नियति के साथ एक प्रतिज्ञा की थी और अब समय आ गया है, जब हम अपनी प्रतिज्ञा को पूरी तरह से या पूर्ण रूप से नहीं, बल्कि बहुत हद तक पूरा करेंगे। आधी रात के समय, जब दुनिया सोती है, भारत जीवन और स्वतंत्रता के लिए जाग जाएगा। एक ऐसा क्षण आता है, जो इतिहास में बहुत कम आता है। जब हम पुराने से नए की ओर कदम बढ़ाते हैं, जब एक युग समाप्त होता है और जब एक राष्ट्र की आत्माए लंबे समय से दबी हुई, उच्चारण पाती है। आज हम दुर्भाग्य के दौर का अंत कर रहे हैं और भारत अपने आप को फिर से खोज रहा है।

15 अगस्त 1947 को हम एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गए। संप्रभुता और हमारे भाग्य की जिम्मेदारी ब्रिटिशताज से भारत के लोगों पर चली गई। कुछ ने इस प्रक्रिया को शक्ति का हस्तांतरण कहा है। यह उससे कहीं अधिक था। यह हमारे देश के लिए एक सपने की परिणति थी। हमारे पूर्वजों और स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा देखा गया सपना। हम अपने राष्ट्र की नए सिरे से कल्पना करने और निर्माण करने के लिए स्वतंत्र थे। यह समझना महत्वपूर्ण है कि स्वतंत्र भारत का यह सपना हमारे साधारण गांवों में, हमारे गरीबों और वंचितों की भलाई में और हमारे देश के सर्वांगीण विकास में निहित था।

मुझे लगता है कि भारत का मिशन दूसरों से अलग है। जो इस देश ने स्वेच्छा से शुद्धि की है, उस प्रक्रिया के लिए दुनिया में कोई समानांतर नहीं है। भारत ने आक्रांताओं से स्टील के हथियार से कम, उसने दैवीय हथियारों से लड़ाई ज्यादा लड़ी है।अन्य राष्ट्र पाशविक बल के समर्थक रहे हैं। यूरोप में चल रहा भयानक युद्ध एक जबरन सच्चाई का चित्रण प्रस्तुत करता है। भारत आत्मबल से सब कुछ जीत सकता है। इतिहास उदाहरण प्रस्तुत करता है, यह साबित करने के लिए कि पाशविक बल आत्मबल के सामने कुछ भी नहीं है। इसके बारे में और संतों ने और शायरों ने अपने अनुभवों का वर्णन किया है।

महात्मा गांधी के भाषण और लेखन

भारत ने चिकित्सा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष यात्रा, शिक्षा और अन्य क्षेत्रों जैसे विभिन्न क्षेत्रों में बहुत कुछ हासिल किया है। फिर भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। हमारे देश में जीवन की समग्र तस्वीर उतनी संतोषजनक नहीं है जितनी हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने कल्पना की थी। बढ़ती लागत और बढ़ती बेरोजगारी के साथ, आम आदमी उतना ही गरीब बना रहता है, जितना वह कभी था। कभी- कभी तो और भी बुरा। यद्यपि शिक्षा का प्रसार हुआ है, इसका स्तर और गुणवत्ता हमेशा की तरह खराब है। न ही राजनीतिक परिदृश्य बहुत उत्साहजनक है। क्योंकि सार्वजनिक समारोहों में होने वाली चर्चाओं और चर्चाओं की प्रकृति बहुत उत्साही नहीं है। जबकि लोकतंत्र दिन- ब- दिन मजबूत होता जा रहा है, धर्म, क्षेत्रवाद और भाषावाद की ताकतें अभी भी मुकाबला करने के लिए एक ताकत बनी हुई हैं। आदर्शवाद, सत्यनिष्ठा और आत्म-बलिदान के गुण, जो स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में प्रचुर मात्रा में प्रमाण में थे, को कई बार गलत बताया जा रहा है।

एक देश का निर्माण उसके नागरिकों द्वारा किया जाता है। इसलिए देश की स्वतंत्रता का अर्थ है, अपने लोगों की स्वतंत्रता। इसका मतलब है कि सभी नागरिकों के पास अपने संसाधनों का समान हिस्सा और अधिकार होगा, लेकिन विरोधाभासी रूप से स्वतंत्र भारत गरीब लोगों की बड़ी आबादी वाला एक समृद्ध देश है। स्वतंत्रता आंदोलन ने साम्राज्यवादी अंग्रेजों को खदेड़ दिया और हमारे संसाधनों पर भारत के लोगों के अधिकारों की स्थापना की, लेकिन हम जो देख रहे हैं, वह यह है कि आज भी मुट्ठी भर लोगों का ही सभी संसाधनों पर एकाधिकार है। लोगों के बीच भारी आर्थिक असमानता है और यह अंतर हर बीतते दिन के साथ बढ़ता ही जा रहा है। देश के अधिकांश लोग गरीबी और बहुत ही अमानवीय परिस्थितियों में जी रहे हैं। इस चकाचौंध वास्तविकता के साथ आना बहुत मुश्किल है, क्योंकि स्वतंत्रता के लिए संघर्ष सभी के लिए समानता प्राप्त करने के लिए लड़ा गया था, लेकिन वर्तमान में

अमीर होते जा रहे हैं। अमीर और गरीब जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह स्वतंत्रता का हमारा सामूहिक सपना नहीं था, जिसकी कल्पना हमारे पूर्वजों ने की थी।

स्वतंत्रता सेनानियों ने हमेशा सोचा कि महिलाओं और बुजुर्गों का सम्मान किया जाना चाहिए। पर्यावरण और परिवेश स्वच्छ और स्वच्छ होना चाहिए। यह आतंकवाद से मुक्त होना चाहिए और हर धर्म, जाति और पंथ के लिए प्यार और सम्मान होना चाहिए। अच्छी परिवहन व्यवस्था और सड़कें होनी चाहिए। देश की रक्षा और सुरक्षा सर्वोपरि होगी। लोगों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होनी चाहिए। किसानों को पेशेवर के रूप में सम्मानित किया जाना चाहिए। सपनों का भारत विरासत और संस्कृति से समृद्ध होना चाहिए। ललित कला, हस्तशिल्प, मूर्तिकला, वास्तुकला, नृत्य, नाटक, साहित्य, कविता, संगीत और वेदों, पुराणों आदि में अपने विशाल ज्ञान में ज्ञान और मानव जाति की भलाई, कल्याण और सेवा के लिए उत्कृष्टता प्राप्त करनी चाहिए और आगे की मानव खोज को संतुष्ट करना चाहिए।

सलिल सरोज
edgeexpress.in

शक्ति स्पोर्ट्स
एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान
जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

स्वतंत्रता दिवस शुभकामनाएं

कार्यालय पंचायत समिति राजसमन्द

जिला राजसमन्द राजस्थान

दूरभाष नं. 02952-220021, ई-मेल आईडी : poegs.raj@gmail.com

आईये हम सब मिल कर राजसमंद ब्लॉक को

ODF + (खुले में शौच मुक्त से आगे) बनाए।

ऑपरेशन रिलीफ को सफल बनाए

स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण): चलों चलें एक काम करें - गंदगी मुक्त हर गांव करें।

कचरा और गंदा पानी फैलाये बीमारी, प्रबंधन से सुखी हो हमारी जिन्दगानी

- समस्त परिवार शौचालयो का प्रयोग करें।
- खुले में शौच नहीं करें, खुले में शौच करने पर जुर्माने का प्रावधान किया गया है।
- ठोस एवं तरल कचरा प्रबन्धन के कार्यो में सहयोग करें।
- घर से ही गीले एवं सुखे कचरे को अलग-अलग कर कचरा संग्रहण वाहन में डाले।
- सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग नहीं करें।
- शौचालय की सफाई रखें।
- अपने आस- पास नाली का गंदा पानी एकत्रित नहीं होने दें।
- ठोस कचरा गली मोहल्लों में डालने की बजाय नियत स्थान पर ही डालें।
- संस्थाओं एवं सार्वजनिक स्थानों पर कचरा पात्र का उपयोग करें।
- गीला एवं सुख कचरा अलग-अलग रखें।
- शौच के बाद एवं भोजन से पहले साबुन से हाथ धोएं।
- जनप्रतिनिधी, स्वच्छग्राही घर-घर जाकर जन साधारण को जागरूक कर स्वच्छता प्रेमी/ सहयोगी बनें।

अरविंदसिंह राठौड़
प्रधान

भुवनेश्वर सिंह चौहान
विकास अधिकारी

पंचायत समिति राजसमंद, जिला राजसमंद

इंदर राजा गाजो : वरखा रो मौरत हाजो

हंगळा काम टेम पे हाऊ लागे। बामण टीपणों देखनी काम रो मौरत बतावे। वणी परवाणे चालो तो काम थाळे आवै। नी तो आखा मळक में ठड़ीका खाताई फरो। कदी- कदी मेहबाबो आवा में घणो करड़ो पड़े। साइत पेट में बी दुखी सके। करड़ो पड़तो हांतर बी मानी जावे जो हाऊ। म्हा तो वणीने घणेमान माना हां पण मौसम मेखमा वाळा धके पड़े ज्यूं ई बोले। वणां रे हिसाबऊं तो बाबो घणी वितावे। मेखमा रे ताळा लगावा री नौपत बी आई जावे।

पाणी रा मेखमा वाळा बी याईस बात करवा लागे। वरसो नी तो जनता मोर माख्या ज्यूं दोळी फरी मंडेला एलाज मेखमा वाळा री गतागम कोई नी। उनाळा में माछर माख्या रो नेम खोज परो जावे जणीरो क्रेडिट वेईस लेवे। वरखा वरताई फौज पाछी त्यार वे जणीने हमाळणो फोरो काम नी है। आए दन सिकायता वे तो माछर- माख्या मारता फरो। उल्टियां दस्तां मलेरिया- फलेरिया न डेंगू सिकनगुणिया ने गुणिया में लेणो घणो अबको काम है। केई डाकदर केवे है के बरखा वरे तो बोहनी बट्टा वेवे। उनाळा में तो मारवा ने माख्यां बी नी रेवे। नराई डाकदरां री पेटा भराई एकला मलेरिया रे माथे है। मलेरियो वणां रे सब काम डगावे। सोरा सोर्‌यां री भणाई ऊं लेईन हगाई हगपण हुदी सब काम असी टेव ऊं काड़े के कठेई अमर नी आवा टेवे।

नगर पालिका वाळा बी होरा रेवे। पाणी नी वे तो नाळ्यां एकदम साफ। कचरो न गंदीवाड़ा रो काम नी। सफाई वाळा रे बी घणी साता आवे। वणाने बरखा वरताई सफाई पे ढूकणो- पड़े तो अखरे नी काई। वरखाऊं सड़क मेखमा वाळा बी दुखी रेवे। गेला में गोड़ा हमाणा खाड़ा पड़े तो भरवा आगे फुसकत नी मले। विहळी वाळा ने बी निसैणी लेईन खंबे खंबे लेणा हांतरी करणी पड़े।

केवा वाळा तो केवता रेई। कंडो कंडो मूंडो बांधो। जतरा मूंडा वतरी वातां। मेहबाबो, कान खोलीन हुणी लो। आपणे कंडेई छाळे नी लागणो। आखी दनिया में वरसणो। मेवाड़ रे तळावां री चादर डाकणी चावे। राणा जी रा ऊंचा गोखड़ाऊं देखां तो पीछोलो हमेस भर्‌यो दीखणो चावे। हामळ्यो क नी हामळ्यो।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
वरिष्ठ साहित्यकार
उदयपुर, 90012-95523

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

जयवर्द्धन NEWS

जिन महान सेनानियों के प्रयास से हमें
आजादी मिली उन्हें शत्-शत् नमन

स्वतंत्रता दिवस पर देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

रॉयल मार्बल एंड ग्रेनाईट

Supplier of All Kinds Marble Slabs,
Green, Granite & Tiles Et.

Mob. 9214035786, 7725999777

Kankroli Distt. Rajsamand (Raj.)

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..

अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

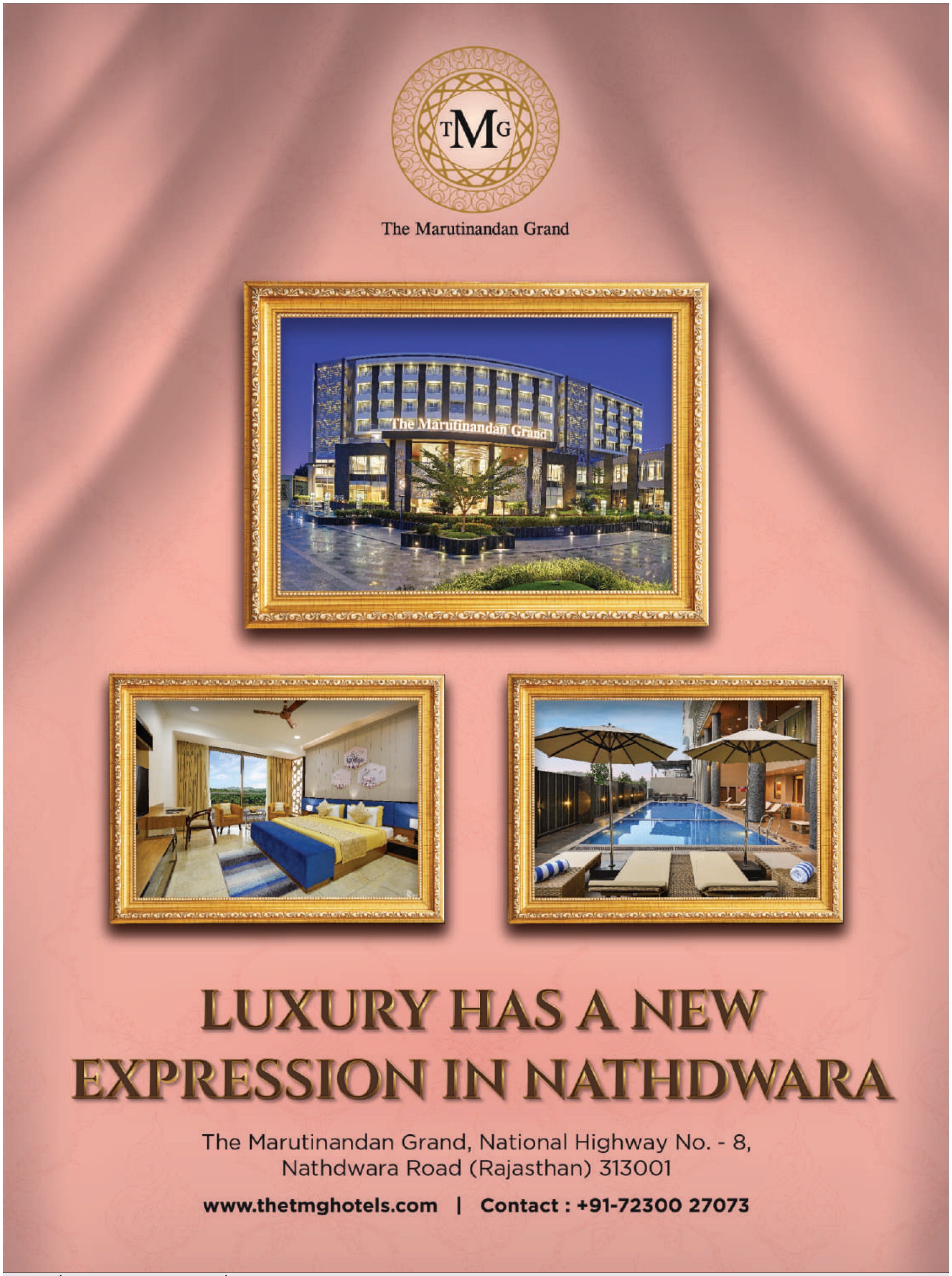
TMG
The Marutinandan Grand
The Marutinandan Grand
LUXURY HAS A NEW EXPRESSION IN NATHDWARA
The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001
www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट, जेके मोड़ के पास
कांकरोली, जिला राजसमंद, 94142-39648, 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन